Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 51 • 26 सितंबर - 2 अक्टूबर, 2022 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 24-09-2022 • पेज : 20 • ₹ 10

हे प्रभो! यह तेरापंथ

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE सत्यमेव जयते | आज़ादी का अमृत महोत्सव | Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad | भारतीय रेल INDIAN RAILWAYS

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के माध्यम से तेरापंथ धर्मसंघ का लहराया विश्व में परचम

रक्तदान के क्षेत्र में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने किया नव इतिहास का सृजन

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का संयुक्त तत्वावधान, रेल मंत्रालय का मिला व्यापक सहयोग

भारत के सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों सहित विश्व के 38 देशों में रक्तदान शिविरों के आयोजन

आचार्य प्रवर के मंगल आशीर्वाद से युवा शक्ति में हुआ ऊर्जा का संचरण

एक ऐसी रक्त क्रांति जिसने मानव सेवा के क्षेत्र में भारत को विश्व पटल पर अग्रणी पंक्ति में ला दिया
एक ऐसा उत्सव, जिसने देश की आजादी के अमृत महोत्सव पर एक नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया
एक ऐसा महाअभियान जो देश की सरकार और तेरापंथ धर्मसंघ की युवा शक्ति के बीच तालमेल की अनूठी मिशाल के तौर पर याद किया जायेगा

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव... रक्तदान अमृत महोत्सव

१७ सितम्बर, २०२२ की सुबह का सूरज जैसे मानवता की सेवा के लिए उदित हुआ। देश भर में जहां नजर दौड़ाओ MBDD की लाल टी-शर्ट पहने जोशीले कार्यकर्ताओं का हुजूम नजर आ रहा था। हजारों लेब टेक्निशियन, नर्सिंग स्टाफ व डॉक्टर्स की टीम विश्व के सबसे बड़े रक्तदान अभियान का हिस्सा बनने के लिए तैयार थी। रक्तदाताओं के हुजूम को देखकर सुबह ही लग गया कि आज नव इतिहास का सृजन होने वाला है।

भारत देश अपनी महान संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों के कारण सम्पूर्ण विश्व में विशिष्ट पहचान रखता है भारतीय संस्कृति में सेवा को धर्म के रूप में देखा जाता है। यहां ऋषि-मुनियों और धर्म गुरुओं ने सदैव आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया है जिसका सम्पूर्ण राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में विशिष्ट योगदान रहता है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की संगठनमूलक संस्थाओं में एक विशिष्ट नाम है-'अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्'। इसका उदय नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी के क्रांतिकारी चिंतन से हुआ।

(शेष पृष्ठ २ पर)

भारत गणराज्य के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ मेगा ब्लड डॉनेशन ड्राइव को समर्थन देते हुए।

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल और अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा अहमदाबाद में एमबीडीडी का उद्घाटन करते हुए

मानव सेवा को समर्पित एमबीडीडी के आयोजन के लिए असम के राज्यपाल ने किया अभातेयुप का सम्मान।

✦ *जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वर्तमान में एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल आध्यात्मिक संरक्षण में यह संस्था सेवा, संस्कार और संगठन के कार्य कर तेरापंथ धर्मसंघ को देश-विदेश में नयी ऊंचाई प्रदान करने में योगभूत बन रही है। अभातेयुप का मुख्य उद्देश्य युवापीढ़ी को अध्यात्म, नैतिकता और सेवा के संस्कारों से पोषित करना है। लाखों कार्यकर्ता इस संगठन की विभिन्न जनोपयोगी गतिविधियों के साथ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

दुनिया जहां एक तरफ रूस और युक्रेन के युद्ध की विभीषिका से जूझ रही है दोनों देश एक-दूसरे के नागरिकों के रक्त के प्यासे बने हुए हैं वहीं दूसरी तरफ भारत में आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण में अभातेयुप रक्तदान रूपी रक्तक्रांति कर रही है।

अभातेयुप द्वारा अपने ५८वें स्थापना दिवस और आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष पर मानव सेवा के इस उपक्रम को माध्यम बनाकर १७ सितम्बर, २०२२ को भारत सरकार के साथ मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव (MBDD) का देश-विदेश में विशाल आयोजन किया गया, जो इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में अंकित हो गया है। अब तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव २०२२ में अभातेयुप शाखाओं द्वारा २६६६ रक्तदान शिविरों के माध्यम से १६६५३६ यूनिट रक्त संग्रह किया गया। यह विश्व इतिहास का आज तक का सबसे बड़ा रक्तदान अभियान है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ७२वें जन्मदिवस का सुखद संयोग अभातेयुप के इस अभियान के साथ जुड़ने से यह और अधिक महत्वपूर्ण बन गया।

धर्म, जाति और समुदाय से ऊपर उठकर कश्मीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कटक तक भारत के सभी महानगरों, नगरों, कस्बों, ढाणियों, दुर्गम रेगिस्तान के साथ सुदूर दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों जैसे-लेह लद्दाख, उत्तराखण्ड के दुर्गम पहाड़ी इलाके, जैसलमेर, बाड़मेर के रेगिस्तानी क्षेत्र आदि में स्थापित सभी रक्तदान शिविरों पर जहां एक ओर रक्तदाताओं में रक्तदान के प्रति भारी उत्साह देखने को मिला, वहीं पूरे देशभर में राजनेताओं, अभिनेताओं, राजकीय सेवा में सेवारत विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों, खेल एवं सिनेमा जगत से जुड़ी हुई हस्तियों, उद्योगपतियों आदि ने शिविर स्थल पर उपस्थित होकर रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाया। मानवता में प्राण भरने के लिए रक्तदाताओं ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सूक्ति को साक्षात किया।

मानव सेवा के इस प्रयास की सफलता हेतु अनेक आदरणीय धर्मगुरुओं ने विडियो संदेश जारी कर अपना आशीर्वाद प्रदान किया। देश के महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय, माननीय प्रधानमंत्री महोदय, विभिन्न राज्यों के महामहिम राज्यपालगण, माननीय मुख्यमंत्रीगण सहित दिग्गज एवं विशिष्ट हस्तियों ने आयोजन की सफलता हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की। केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, स्थानीय प्रशासनिक निकायों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं समाजसेवी संगठनों का सहयोग व समर्थन प्राप्त हुआ।

भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय का संयुक्त रूप से जुड़ना और रेल मंत्रालय का व्यापक समर्थन इस महाअभियान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा तथा अभातेयुप के लिए भी गौरव का विषय रहा। केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने इस अभियान को समर्थन देते हुए रेल मंत्रालय का 'लोगो' (प्रतीक चिह्न) एमबीडीडी की प्रचार सामग्री में उपयोग करने की स्वीकृति प्रदान की। रेल मंत्री के निर्देश पर रेल मंत्रालय ने स्वयं इस अभियान के प्रति जागरूकता हेतु देश के सभी बड़े रेलवे स्टेशनों की ७००० से अधिक टीवी स्क्रीन्स पर इस अभियान की जानकारी देते हुए जन-जन को रक्तदान करने की अपील कर अभूतपूर्व सहयोग किया। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री मनसुख मांडविया ने स्वास्थ्य मंत्रालय का 'लोगो' (प्रतीक चिह्न) एमबीडीडी के प्रचार-प्रसार में उपयोग करने, अभातेयुप को स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन करने एवं सरकारी वेबसाईट ई-रक्तकोष पर रक्तदाताओं का पंजीकरण करने का निर्देश जारी कर इस अभियान को व्यापक समर्थन दिया। मंत्री महोदय ने आयोजन से दो दिन पूर्व वर्चुअल वेबिनार में स्वयं लाइव उपस्थित होकर अभातेयुप के कार्यकर्तागण से अभियान की प्रगति की जानकारी प्राप्त की तथा लोगों से रक्तदान करने की अपील की एवं १७ सितम्बर, २०२२ को दिल्ली में आयोजित रक्तदान शिविर में पहुंचकर अभियान का जायजा लिया।

अभातेयुप द्वारा पूर्व में भी MBDD के अंतर्गत अभातेयुप द्वारा १७ सितम्बर, २०१२ को एक दिन में देश के २७६ शहरों एवं कस्बों में ६५१ रक्तदान शिविरों के माध्यम से ६६,६०० यूनिट रक्त संग्रह का कीर्तिमान रचा गया। ०६ सितंबर २०१४ को देश के २८६ स्थानों पर ६८२ रक्तदान शिविरों के माध्यम से १००२१२ यूनिट रक्तदान के साथ 'गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में नाम दर्ज हुआ। सन् २०१६ में एक वर्ष तक निरंतर ३६६ दिन तक ४१० स्थानों पर ४६८ रक्तदान शिविरों के साथ विश्व के सबसे लंबे समय तक निरंतर चलने वाले रक्तदान अभियान के रूप में 'इण्डिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में नाम दर्ज हुआ। सन् २०२० में कोविड-१९ की विकट परिस्थितियों व लॉकडाउन की स्थिति में भारत सरकार के अनुरोध पर ५५००० यूनिट रक्तदान एवं एक माह में २००० प्लाज्मा डोनेशन के साथ 'एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड', 'इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड', 'ग्लोबल रिकॉर्ड एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन और एशिया पेसिफिक रिकॉर्ड्स' में अभातेयुप का नाम दर्ज हुआ। मानव सेवा के कीर्तिमानों का सिलसिला प्रारंभ हुआ और इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित होता गया। संस्था का लक्ष्य केवल रक्तदान का कीर्तिमान स्थापित करना ही नहीं अपितु जन-जन को रक्तदान का महत्त्व समझाते हुए रक्तदान हेतु प्रेरित करना एवं प्रयास करना कि रक्त की कमी के कारण कोई भी व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त न हो तथा जरूरत के समय लोगों को जीवनदायी रक्त सुलभ रूप से मिल सके।

अभातेयुप के प्रेरणास्रोत युगप्रधान परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का प्रतिपल पावन आशीर्वाद इस अभियान में जुड़े कार्यकर्ताओं के लिए सतत ऊर्जा स्रोत बना रहा।

सीढ़ियां तो उनके लिए होती है, जिन्हें छत पर जाना होता है।
जिनकी नजरें हो आसमान पर, उन्हें अपने रास्ता स्वयं बनाना पड़ता है।

MBDD के राष्ट्रीय प्रभारी श्री हितेश भांडिया एवं राष्ट्रीय सहप्रभारी श्री सौरभ पटावरी का निष्ठापूर्ण अतुलनीय श्रम व सहयोग रहा है। वे दोनों गत छह माह से अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक कार्यों को गौण करते हुए निरन्तर इस अभियान की सफलता में लगे रहे और अभातेयुप के इस इतिहास सृजन में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया।

तेयुप की सभी शाखा परिषदों, तेयुप के कार्यकर्ताओं एवं सम्पूर्ण युवा शक्ति के उत्साह, जूनून, श्रम और सहयोग से यह महाअभियान अपार सफलता के साथ इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हो पाया। राज्य स्तर एवं स्थानीय स्तर पर अनेक सेवाभावी संस्थाएं सहयोगी बनी। सभी सरकारी विभागों एवं कर्तव्यनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण, कर्मचारीगण आदि ने पूर्ण जिम्मेदारी के साथ अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए सहयोग किया। देश के हजारों ब्लड बैंकों एवं उनकी दायित्वशील मेडिकल टीम ने पूर्ण सहयोग किया। विभिन्न टीवी चैनलों, समाचार-पत्रों ने प्रमुखता से इस अभियान को अपने चैनल और समाचार पत्र में स्थान दिया। हजारों समर्पित कार्यकर्ताओं ने रात-दिन एक कर इस अभियान को सफल बनाया। अभातेयुप के आह्वान पर मानवता के इस महायज्ञ में लाखों रक्तदाताओं ने अपनी रक्त बूंदे समर्पित कर मानव सेवा से इतिहास रचने में सहभागिता की।

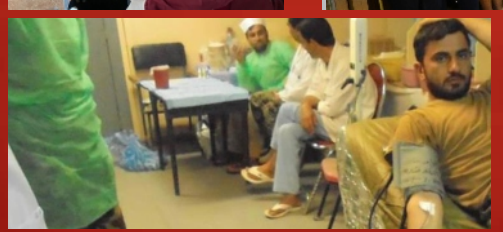

✦ अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को गलत कार्यों से बचने की प्रेरणा देते हैं।

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

नवदीक्षित चारित्रात्माओं को आचार्यप्रवर ने प्रदान की बड़ी दीक्षा

४७वाँ राष्ट्रीय महिला मंडल अधिवेशन

मुक्ति की प्राप्ति के लिए चंचलता को मिटाना आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १६ सितंबर, २०२२

दिव्य शक्ति के भंडार आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ६ सितंबर को नवदीक्षित एक मुनि व तीन साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार कराते हुए पाँच महाव्रत एवं रात्रि भोजन विरमण व्रत को अलग-अलग विस्तार कर समझाया। सभी नवदीक्षितों ने छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार किया।

भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रसंग आया है, प्रश्न किया गया कि क्या जीव सदा-प्रतिक्षण ऐजन, वेजन, चलन, स्पंदन, घटन, क्षोभ और उदिर्णा को प्राप्त होता है तथा उस भाव परिणाम में परिणित होता है?

भगवान ने उत्तर दिया—हाँ मंडित पुत्र जीव सदा प्रतिक्षण उन सबको प्राप्त होता है और उस भाव परिणाम में परिणित होता है। जीव में प्रवृत्ति चंचलता रहती है। उस चंचलता में उस जीव के अंतक्रिया हो सकती है क्या? उत्तर दिया गया यह संभव नहीं है। जब तक प्रवृत्ति चालू रहती है, तब तक अंतक्रिया नहीं हो सकती। अंतक्रिया यानी सारे कर्मों का क्षय हो जाना, मुक्ति प्राप्त हो जाना।

चंचलता या प्रवृत्ति न रहे तो अंतक्रिया हो सकती है क्या? उत्तर दिया गया हाँ ये हो सकता है। सर्वकर्म नाश और मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है।

जो जीव मोक्ष में जाने वाला है, उसके अंतक्रिया कैसी होती है। उसके लिए पहली

बात है—वीतराग अवस्था को प्राप्त होना। बंध की दो क्रियाएँ हैं—सांप्रयिकी और ऐर्यापथिक। पहले से दसवें गुणस्थान तक सांप्रयिकी होती है। ग्यारहवें , बारहवें और तेरहवें गुणस्थान ऐर्यापथिक बंध होता है। वीतराग अवस्था में जो बंध होता है, वो ऐर्यापथिक कहलाता है। सांप्रयिक अवस्था में जीव में कषाय विद्यमान रहता है।

ऐर्यापथिक बंध में एकमात्र सात वेदनीय कर्म का बंध होता है। वह भी हल्का-फुल्का, पहले समय में बंधा, दूसरे में वेदन हुआ और तीसरे में झड़ गया। सक्रियता की अवस्था में अंतक्रिया नहीं होती। दूसरा प्रस्थान है—सक्रियता से पूर्णतया अक्रियता में आ जाना। कुछ समय में अंतक्रिया की स्थिति पैदा हो जाती है। सारे कर्म झड़ जाते हैं। आचार्यप्रवर ने कर्म झड़ने की प्रवृत्ति को तीन उदाहरण से समझाया।

योग निरोध होता है, तब उस अवस्था में जल्दी ही अंतक्रिया होती है। शेष चारों अघाति कर्मों का नाश हो जाता है, आत्मा मोक्ष में चली जाती है। इस तरह अंतक्रिया को समझाया गया है। सारांश यह है कि जीव में प्रवृत्ति होती है, जब प्रवृत्ति बंद हो निवृत्ति आती है। अक्रिया की स्थिति आती है। साधु बनकर-वीतराग बनना पड़ेगा। सम्यक्त्व आना भी जरूरी है। चौदहवें गुणस्थान में आते ही अंतक्रिया समाप्त हो जाती है, जीव मोक्ष चला जाता है। यह चरम साधना प्रवृत्ति का प्रकरण है।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षितों को आगम पठन की प्रेरणा दिलाई। अंतक्रिया से पहले सद्क्रिया करनी होगी। संयमपूर्ण क्रिया होती रहे। अयोग संवर की आंशिक प्राप्ति हो सकती है। जीवन में संतोष, शांति, कषायमंदता, विनय भाव रहे। पाँच महाव्रतों की सुरक्षा करना आवश्यक है।

आचार्यश्री के मंगल उद्बोधन के उपरांत अभातेममं की अध्यक्षा नीलम सेठिया ने अधिवेशन के संदर्भ में जानकारी प्रस्तुत की। मुख्य ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी व अध्यक्ष द्वारा पूज्यप्रवर के समक्ष प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में अभातेममं की ओर से डॉ० माणकबाई कोठारी को श्राविका गौरव अलंकरण, डॉ० मोनिका जैन व ऐश्वर्या नाहटा को सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया। प्रशस्ति-पत्रों का वाचन क्रमशः सुमन नाहटा, वीणा बैद व सुनीता जैन ने किया। पुरस्कार और अलंकरण प्राप्तकर्ताओं ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। इस संदर्भ में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने भी अपना उद्बोधन दिया। तदुपरांत आचार्यश्री ने अधिवेशन के संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि अभातेममं का धार्मिक/सामाजिक संगठन है। इससे तेरापंथ की बाइयों के विकास का मंच मिल गया है। इनका एक बड़ा नेटवर्क है। बाइयों में तत्त्वज्ञान का विकास हो रहा है, यह अच्छी बात है। सम्मान-पुरस्कार प्रदान करना भी अच्छी बात होती है। सभी पुरस्कारप्राप्तकर्ताओं का जीवन अच्छा रहे, सबके प्रति मंगलकामना तथा अभातेममं भी अपना धार्मिक-आध्यात्मिक विकास करती रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शारीरिक परिवर्तन के साथ जीवनशैली में परिवर्तन अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १८ सितंबर, २०२२

आगम वाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि 'भगवती सूत्र' में प्रश्न किया गया है कि भंते! ओदन होता है। कुलभाष है, सुरा है, ये किन जीवों के शरीर हैं? गौतम! ओदन, कुलभाष, सुरा में जो सघन द्रव्य है, वे पूर्व पर्याय प्रज्ञापन की अपेक्षा से वनस्पति जीवों के शरीर हैं।

हमारे सामने जो दृश्य वस्तुएँ हैं, वो या तो जीवित शरीर है या जीव-मुक्त शरीर है। चावल पूर्व पर्याय से वनस्पतिकाय का शरीर है। फिर उनको अग्नि से शोषित कर दिया गया, फिर वे अग्नि जीवों के शरीर कहला सकते हैं। कुलभाष और सुरा में जो सघन पर्याय है, वो वनस्पतिकाय से है। बाद में अग्नि से संस्कारित होने के बाद अग्नि जीवों का शरीर कहा जा सकता है।

सुरा में जो द्रव तत्त्व हैं वो पानी के जीवों का शरीर है बाद में वह अग्नि से संस्कारित हुआ है, इसलिए इसे अग्नि जीवों का शरीर कहा जा सकता है। ये पूर्व पर्याय और उत्तर पर्याय के संदर्भ में शास्त्रकार ने बताया है। इसी प्रकार लोहा, ताँबा, राँगा, शीशा, पाषाण से पूर्व पर्याय की अपेक्षा तो पृथ्वी जीवों के शरीर हैं। बाद में वे अग्नि रूप में परिणित हो जाते हैं, तो अग्नि जीवों का शरीर कहा जा सकता है।

इसी प्रकार हड्डी, जली हुई हड्डी, चर्म रोग, सींग, खुर, नख जो बिना जले हुए हैं या जले हुए हैं, इन्हें त्रस प्राण जीवों के शरीर कहते हैं। बाद में जब दग्ध हो जाएँ तो इन्हें पूर्व पर्याय की अपेक्षा तो त्रस व उत्तर पर्याय की अपेक्षा से इन्हें अग्नि प्राण जीवों का शरीर कहा जा सकता है।

इस तरह जीवों में परिणमन तो आता है। पदार्थ में स्थायीत्व है, तो परिवर्तन भी है। जीवन को तीन भागों में बाँटा जाता है—बचपन, जवानी और बुढ़ापा। परिवर्तन को हम रोक भी नहीं सकते हैं। परिवर्तन के साथ आदमी अपनी जीवनशैली का क्रम अच्छा रखे। शरीर में परिवर्तन हो रहा है, तो जीवनशैली में परिवर्तन अपेक्षित है।

शरीर में परिवर्तन आया तो वाणी में भी परिवर्तन आए। समता-शक्ति रखें। कायोत्सर्ग करते रहें। धार्मिक साधना में समय ज्यादा लगाएँ। जीवन में धैर्य भी रखें। पर्याय परिवर्तन का सिद्धांत है, उसके साथ हमारे चैतन्य का परिवर्तन भी यथायोग्य होता रहे। दोनों में सामंजस्य रहे तो गाड़ी अच्छी तरह चल सकती है।

कालूयशोविलास की व्याख्या करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जब पूज्य कालूगणी लाडनूं पधारे तो बालक तुलसी भी उन्हें देखकर आकृष्ट हुआ। तुलसी ने अपनी माँ से कालूगणी के बारे में कई जिज्ञासाएँ समाहित की। बालक तुलसी फिर माँ से पूछते हैं कि इन पुजी महाराज के बाद कुण पुजी महाराज बनेंगे। माँ ने डाँटते हुए कहा कि खबरदार जो ऐसी बात कभी करी तो। आपणां पुजी महाराज तो क्रोड़ दिवाली राज करो, ऐसी मंगलकामना करें। बालक तुलसी बार-बार पुजी महाराज को देखने की इच्छा व्यक्त करता है तो माँ कहती है—बेटा तू हलुकर्मी है, जो थांरी इसी इच्छा हो रही है। बालक बोला—मैं इनका छोटा सा शिष्य बन जाऊँ तो माँ बोली बेटा ऐसा भाग्य तो भाग्यशाली का होता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि वृद्धावस्था आते-आते व्यक्ति की कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय कमजोर पड़ जाती है। प्रयोग करने से वे शक्तिशाली रह सकती हैं, पर अगर व्यक्ति जागरूक रहे। जीवन में व्यायाम को अपनाए। जो व्यक्ति वर्तमान में सजग रहते हैं, वो व्यक्ति वृद्धावस्था को रोक सकते हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हमें समय का सही उपयोग करना है तो हमें धैर्य संपन्न बनना होगा। अधीर न बनें। समय का सदुपयोग करना सीखें तो हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। हम धृति-संपन्न बनें। विपरीत स्थिति में भी हम विकृति में न जाएँ। अपने स्वभाव में रहें।

समणी अमलप्रज्ञा जी, समणी जिज्ञासाप्रज्ञा जी ने विदेश यात्रा के अनुभव श्रीचरणों में अभिव्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ *जहाँ अहिंसा होती है, संयम होता है, वहाँ पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

न्यायपालिका में किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १४ सितंबर, २०२२

जन-जन के श्रद्धा के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है कि देव जगत में चार प्रकार के देव भवनपति, वाण-व्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक होते हैं। वैमानिक दो प्रकार के होते हैं। कल्पोपन्न और कल्पातीत। कल्पोपन्न में बारह देव लोक हैं।

तीसरे देवलोक का इंद्र है सनत कुमार। पहले देवलोक के इंद्र शुक्र और दूसरे देवलोक के इंद्र ईशान हैं, ये दोनों आपस में सटे हुए हैं। इनके बीच संघर्ष होता है क्या? भगवती सूत्र में बताया गया है कि उनमें विवाद भी होता है पर वे दोनों विवाद सुलझा नहीं पाते हैं। तो फिर वे अपने से ऊपर के तीसरे देवलोक के इंद्र सनत कुमार की मानसिक स्मृति करते हैं। सनत कुमार तत्काल वहाँ पहुँच जाता है। उसके सलाह निर्देश को दोनों इंद्र मान लेते हैं। विवाद को साधने का मौका मिल जाता है।

हम मनुष्य जगत के लोग हैं, हमारे लिए भी एक शिक्षा-प्रेरणा की बात है विवाद सुलझाने के लिए लोग न्यायपालिका में जाते हैं। पर न्यायपालिका में झूठी बात नहीं बोलनी चाहिए।

प्रश्न किया है कि सनत कुमार जो देवराज हैं वो किस प्रकार का है? उसके बारे में छः प्रश्न पूछे गए हैं–(१) वह भवसिद्धिक है या अभव सिद्धिक, (२) वह सम्यक्-दृष्टि है या मिथ्या दृष्टि, (३) वह परीत संसारी है या अनंत संसारी, (४) वह सुलभ बौद्धिक है या दुर्लभ बौद्धिक, (५) वह आराधक है या विराधक, (६) वह चरम है या अचरम।

इनके इतर में गौतम को संबोधित करके कहा गया कि वह सनत कुमार वह भव-सिद्धिक है, भव्य है। भव्य में भी वह सम्यक् दृष्टि है। सम्यक् दृष्टि में भी वह परीत संसारी है। परीत संसारी में भी वह सुलभ बौद्धिक है। सनत कुमार आराधक है और वह चरम भी है। देवगति का भव भी इसका अंतिम-चरम है और अगली गति मनुष्य में भी वह चरम ही बनेगा। इस तरह ये छः प्रश्नों के उत्तर हैं।

यहाँ प्रश्न होता है कि वह ऐसा क्यों है? भगवती सूत्र में बताया गया कि सनत कुमार है, वह साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं का अनुरागी है। हित, सुख और पथ चाहने वाला है, उनपे अनुकंपा चाहने वाला है। निःश्रेयश की दिशा में प्रेरित करने वाला है। इसलिए वह भव्य और सम्यक् दृष्टि आदि गुणों वाला है।

प्रश्न किया गया कि सनत कुमार इंद्र है, उसकी स्थिति कितनी है? बताया गया कि सात सागरोपम की स्थिति वाला है। प्रश्न किया गया कि वह जब कभी देवलोक का आयुष्य पूरा करेगा वह कहाँ जाएगा? उत्तर दिया गया कि गौतम! वह सनतकुमार महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध, प्रशांत, मुक्त हो जाएगा। वहाँ उसका मनुष्य का भव होगा।

हमारे समाज में ऐसे मान्य व्यक्ति हो जो सनत कुमार की तरह विवाद को सलटा देने वाला हो। विवाद को न्यायपूर्ण तरीके से सलटा दिया जाए तो कोर्ट में जाने की नौबत कम आ सकती है। सनत कुमार जैसी भावना रखना भी अच्छी बात है। हम कल्याण मित्र बनें।

कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए महायशस्वी ने फरमाया कि जयपुर चातुर्मास में देश-देश के लोग आए हैं। जयपुर के रेजीडेंट पीटरसन ने भी कालूगणी के दर्शन किए हैं। कार्तिक में नौ दीक्षाएँ एक साथ हुई हैं। जी० आर० हालेंड साहब आदि विशेष लोगों ने दर्शन किए हैं। चातुर्मास पूरा कर मकराना, बोरावड़ परसते हुए सुजानगढ़ में मर्यादा महोत्सव कराते हैं। वि०सं० १९८१ का चातुर्मास चुरू में कृपा कराते हैं। वहाँ भी दीक्षा होती है। उनमें एक तो भाईजी महाराज चंपालाल जी की दीक्षा होती है।

महासती जेठांजी का भी महाप्रयाण हो जाता है। पाँच आचार्यों के काल में उनका संयम पर्याय रहा। कानकंवरजी को महासती पद पर स्थापित करवाते हैं।

पूज्यप्रवर ने तपस्या का प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्याग, संयम और तपस्या है सुगति प्राप्त करने का माध्यम : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १३ सितंबर, २०२२

आसोज कृष्णा तृतीया, गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी की मासिक पुण्यतिथि। गुरुदेव तुलसी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि भगवती सूत्र में एक प्रसंग आता है–तामली तापस का। एक बार भगवान महावीर विराजमान थे। एक दिव्य शक्ति उपस्थित हुई। दूसरे देवलोक ईशान का इंद्र भगवान महावीर के पास पहुँचा। उनकी रिद्धि को देखा तो गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से जिज्ञासा की कि ये जो देवर्षि है वो आई भी थी और चली भी गई। इन्होंने क्या तपस्या की होगी, कि इन्होंने ऐसी रिद्धि प्राप्त की?

भगवान महावीर ने ईशान देवलोक के इंद्र के बारे में जानकारी दी कि इसके पिछले जन्म की बात है। ताम्रलिपि नगरी में एक मौर्य पुत्र तामली नाम का गृहपति रहता था। एक दिन रात्रि के समय उसके मन में विचार आया कि वर्तमान में पुरानी पुण्याई भोग रहा हूँ। कितनी-कितनी मेरे पास समृद्धि है। जो मैंने तपस्या-साधना से अर्जित की होगी। कल्याणकारी कर्मों को मैं भोग रहा हूँ। खर्चा भी कर रहा हूँ अपना पुराना पुण्य।

इस जन्म में भी मैं साधना करूँ। अपने परिवार की जिम्मेवारी अपने बड़े बेटे को सौंप दूँ और मैं अपनी साधना में लगूँ। वह संन्यासी का रूप धारण कर तापस बन गया। प्राणामा नाम की साधना प्रव्रज्या स्वीकार कर ली। साथ में अभिग्रह किया है कि मैं जीवनभर बेले-बेले की तपस्या करता रहूँ। पारणा में भी अत्यंत संयम रखूँगा, केवल चावल खाऊँगा। उन चावलों को भी २१ बार पानी से धोकर खाना। उनका सारा सार निकल जाए।

दोनों भुजाएँ ऊपर कर आतापनाएँ लूँगा। शरीर कमजोर हो गया। सोचा अभी मेरे में पुरुषार्थ-बल है, मैं संथारा कर लूँ। वह संलेखना-अनशन करता है। अनशन में प्रायोगमन कर स्थित हो जाता है। अनशन संपन्न हुआ। वर्तमान शरीर को छोड़कर दूसरे देवलोक ईशान में इंद्र बना।

तामली तापस ने प्राणामा प्रव्रज्या स्वीकार की। इसमें खास बात यह है कि प्रणाम करो। मनुष्य या कोई भी जीव मिल गया उसको प्रणाम करना। मैंने चिंतन किया कि प्राणामा प्रव्रज्या का रहस्य क्या है? इसमें रहस्य यही लगा कि इसमें अहंकार विजय की साधना की जाती है। हर प्राणी को प्रणाम करना। इसने हजारों वर्ष तक बेले-बेले की तपस्या की।

तामली तापस का चिंतन हमारे लिए बड़ा काम का है। गृहस्थों के लिए यह चिंतन का विषय बनता है कि आप लोग बड़े-बड़े धनवान हो सकते हैं। यह शायद पिछले कर्मों की पुण्याई भोग रहे हैं। आगे के लिए मैं क्या करता हूँ। पुराना तो खाली हो जाएगा।

यह चिंतन आदमी को कुछ आगे के लिए करने का दिशा-निर्देश दे सकता है। तामली तापस उसका यह एक उदाहरण है। पुण्य तो छोटी बात है। मूल बात तो आत्मा के कल्याण की है। मोक्ष की दृष्टि से मैं क्या करता हूँ? आत्मा का परम स्वरूप मुझे प्राप्त हो। तपस्वियों में ऊँचा उदाहरण है, तो तामली तापस का है। तपस्या करना अच्छी बात है।

तपस्या के साथ आतापना और साधना से कोई लब्धियाँ-सिद्धियाँ भी प्राप्त हो सकती हैं। पर सबसे बड़ी लब्धि यह है कि आत्मा निर्मल बन जाए। मोक्ष प्राप्त हो जाए। भवनपति देवों ने तामली तापस से निवेदन भी किया कि आप हमारे इंद्र बन जाओ। उन्होंने तामली तापस से निदान करने का निवेदन भी किया। तामली तापस ने उनको आदर नहीं दिया और वह मर करके दूसरे देवलोक का इंद्र बना। बल चंचा के भवनपति देवों ने सोचा कि हमारी अवहेलना कर रहे हैं। उन्होंने तामली तापस के मृत शरीर के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया।

मिथ्या दृष्टि कोई जीव भले हो, उसे तपस्या का फल तो मिलता है। हमें चिंतन मिलता है कि आगे के लिए सोचो। तपस्या के अनेक आयाम हैं। आदमी को अहंकार विलय की साधना करनी चाहिए। हम लोग तो जैन शासन की प्रवज्या से दीक्षित हैं। श्रावकत्व में भी साधना करते-करते उन्नति हो सकती है। श्रावक श्रावक-धर्म के प्रति जागरूक रहें। जितनी हो सके साधना करें। बारह व्रतों से ऊँची साधना संभवतः सुमंगल साधना है। श्रावक प्रतिमा की साधना करें। हम तप-संयम में जितना आगे बढ़ सकें, हमारे लिए कल्याणकारी हो सकता है।

कालू यशोविलास का विवेचन करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि पूज्य कालूगणी ने बीकानेर चातुर्मास में चिंतन किया कि यहाँ अनेक जैन संप्रदायों के चातुर्मास हैं। हमें शांति रखनी है, ऐसी शिक्षा धर्मसंघ को प्रदान करा रहे हैं। हमें क्षमा धर्म की साधना करनी है। समता का फल अच्छा होता है। भाद्रवा सूद में तेरह दीक्षा हुई है। सफल चातुर्मास होता है। राजलदेसर में मर्यादा महोत्सव कराते हैं। जयपुर से लोग आते हैं। अर्ज करते हैं। जयपुर पधारना फरमा देते हैं। जयपुर लालाजी के मकान में पधारते हैं। चातुर्मास जयपुर में करवा रहे हैं।

कालूगणी अभिवंदना सप्ताह १७ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक मनाना है। अलग-अलग वक्ताओं का भाषण हो सके। कालूगणी के बारे में बताने का प्रयास हो सकेगा। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

उपासक धनराज मालू ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

रिश्तों में प्रेम हो

बालोतरा।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने 'परिवार में प्रिय कैसे बनें' विषय पर कहा कि वर्तमान के समय में परिवारों के आपसी रिश्तों में बिखराव हो गया है। संयुक्त परिवार एकल परिवार की ओर बढ़ने लग गए। इन सभी का महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि रिश्तों में प्रियता, प्रेम समाप्त हो गया है। मुनिश्री ने कहा कि कुछ सूत्रों के माध्यम से रिश्तों में आपसी प्रेम बढ़ाया जा सकता है। अपने घर में जो बुजुर्ग, माता-पिता और भी अन्य कोई हमसे बड़े सीनियर हों उसे सदैव प्रणाम करें। इससे व्यक्ति में विनम्रता के गुणों का विकास होता है और सीनियर व्यक्तियों में सम्मान का भाव विकसित होता है। परिवार में सभी रिश्तों को जीने का प्रयास करना चाहिए। रिश्तों से दूर न रहकर उसका सदैव आनंद उठाएँ। चेहरे पर सदा मुस्कान रहे ताकि रिश्तों में सकारात्मकता रहे। मन के भीतर उदारवादी दृष्टिकोण का विकास करें। जिससे व्यर्थ के क्लेश से बचा जा सकता है। रिश्तों के सुन्दर निर्माण के परिवारजनों में विश्वास की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एक-दूसरे पर सम्पूर्ण विश्वास रखें और विश्वास पर खरा उतरने का भी प्रयास करें। मुनिश्री ने छोटे-छोटे बिंदुओं के माध्यम आपसी सौहार्द और भाईचारे को बढ़ाने की प्रेरणा दी। मुनि भव्यकुमार जी ने भी परिवार में रिश्तों को कैसे मजबूत और सुंदर बनाया जाए इस पर फरमाया। मुनिश्री जयेश कुमार ने अपनी गीतिका के माध्यम से आमजन को रिश्तों की महत्ता और रिश्तों को प्रगाढ़ बनाने पर जोर दिया।

भिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

फरीदाबाद।

साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ॐ भिक्षु के सामूहिक जाप के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि श्रीमद्जयाचार्य ने ३ महोत्सव दिए, जिसमें से एक चरमोत्सव भी है। जब भी स्वामीजी का नाम जुबां पर आता है मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। वे प्रबल पुरुषार्थी थे, वे परम साधक थे, वे निष्प्रकंप थे, अभीत थे।

साध्वी कांतियशा जी ने भावाभिव्यक्ति के साथ गीत का संगान किया। साध्वी अनन्य प्रभा जी ने विचार प्रस्तुत किए। पद्मा गोलछा ने गीत का संगान किया।

विशेष लेख

शक्ति जागरण का शुभ अवसर है नवरात्रि पर्व

❐ मुनि कमल कुमार ❐

जैन धर्म एक अध्यात्मिक धर्म है। यह अहिंसा, संयम और तप पर स्थित है। तीर्थंकरों ने गहन साधना करके केवलज्ञान ही नहीं बल्कि मुक्ति को भी प्राप्त किया। उन्होंने अपने अनुयायियों को भी इसी का प्रतिरोध दिया। उन्होंने दो प्रकार के धर्म की व्याख्या की आगार और अणगार अर्थात् आगार धर्म की परिपालना करने वाले श्रावक-श्राविका कहलाए और अणगार धर्म की पालना करने वाले साधु-साध्वी कहलाए। गृहस्थावास में रहने वाला पूर्ण अहिंसक नहीं बन सकता, क्योंकि उसे खेती, व्यापार, विवाह-शादियाँ, मकान-दुकान ही नहीं प्रतिदिन भोजन-पानी की आवश्यकता रहती है। ये सब सावद्य काम हैं, इसमें हिंसा का होना स्वभाविक है, परंतु इसमें भी ग्रहस्थ पूरा ध्यान रखता है और अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास करता है। जो आवश्यक हिंसा होती है उसका भी प्रायश्चित प्रतिक्रमण करके अपने आपको शुद्ध बना लेता है। जैन अपनी प्रत्येक क्रिया में पूरी यातना रखता है। उसके दिल-दिमाग में अहिंसा, संयम और तप की भावना रहती है। इसलिए जैन कहलाने वाले मांस-मछली, अंडे का पूर्ण निषेध करते हैं, क्योंकि इसमें त्रस जीवों की हिंसा होती है। भोजन बनाने, मकान-दुकान, संस्थान बनाने में जो हिंसा होती है वह स्थावर जीवों की हिंसा होती है अर्थात् त्रस हिंसा से पूर्ण बचना भी बड़ी साधना है।

गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के हम सदा-सदा आभारी रहेंगे। जिन्होंने ग्रहस्थों के मांगलिक कार्यों में भी जैन संस्कार विधि का निष्पण करके हिंसा से अहिंसा की ओर और असंयम से संयम की ओर कैसे बढ़ा जाए, इसका बोध करवाया। आज सैकड़ों ही नहीं हजारों परिवारों में मांगलिक कार्य जैन संस्कार विधि से संपादित होने लग गए। जिससे अनर्थ हिंसा का मानो विराम सा लग गया।

उन्हीं की देन है कि नवरात्रि के पावन प्रसंग पर ९ दिनों तक विविध मंत्रों का जाप करके व्यक्ति शक्तिवान, ऊर्जावान बन सकता है। पूज्यप्रवर की पावन प्रेरणा से प्रारंभ हुआ क्रम पूर्ण निर्वद्य और आध्यात्मिक है। इसे केवल ग्रहस्थ ही नहीं अनेक साधु-साध्वी भी पूज्यप्रवरों द्वारा प्रदत्त पद्धति के अनुसार विधिवत् मंत्र जाप करके आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करते हैं। जिन लोगों को पद्धति की पूरी जानकारी नहीं है वे आज भी नवरात्रि के समय फूल, धूप, दीप आदि की हिंसा से लिप्त देखे जाते हैं, आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति नवरात्रि के समय इस अध्यात्मिक पद्धति की आराधना करके अपने आपको पूर्ण शक्ति संपन्न बनाए। जिससे वह अपने प्रत्येक कार्य में सफलता को प्राप्त कर सके, सभी मंत्र जयतिथि पत्रक, अमृतकलश, ज्ञानकिरण आदि अनेक पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। स्वयं भी इसका प्रयोग करें औरों को भी प्रेरित करें, जिससे अज्ञान और हिंसा का निवारण हो सके और आप जैन होने का गौरव प्राप्त कर सकें।

युवा उत्कर्ष शिविर का आयोजन

कटक।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में 'जागो, युवा जागो' कार्यक्रम के अंतर्गत 'युवा उत्कर्ष शिविर' का आयोजन किया गया, जिसका विषय था– 'कैसे हो युवाओं का उत्थान'। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपना विकास व उत्कर्ष चाहता है। बीज भी वटवृक्ष, छोटा भी बड़ा, वृक्ष भी फलवान होना चाहता है। विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया का नाम है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि युवाओं को धैर्यवान, लगनशील व समर्पित होना चाहिए। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कैलाश सांगानेरिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगान से हुआ। तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष भैरव दुगड़ ने दिया। तेयुप द्वारा एमबीडीडी की जानकारी पंकज सेठिया ने दी। उत्कल मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष दिनेश जोशी ने गीत का संगान किया।

इस अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच सचिव किशोर आचार्य, पूर्व अध्यक्ष प्रकाश अग्रवाल, टैक्सटाइल मर्चेंट अध्यक्ष हनुमानमल सिंघी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के संयोजक शांतिलाल नौलखा एवं विकास चोरड़िया थे। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री मनीष सेठिया ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ

मैसूर।

भगवतीलाल मुणोत के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया।

मैसूर के संस्कारक एवं उपासक अशोक बुरड़, पंकज कावड़िया, लकी श्रीश्रीमाल ने मंत्रों द्वारा इस कार्य को संपन्न किया।

तेयुप अध्यक्ष विकास मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप उपाध्यक्ष नवीन देरासरिया, संगठन मंत्री मोहित बोहरा, विक्रम पितलिया आदि उपस्थित रहे।

गोरेगाँव।

ललित कुमार, नितिन कुमार मादरेचा के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुरेश ओस्तवाल एवं तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी ने संपन्न करवाया।

मादरेचा परिवार ने संस्कारक टीम के प्रति आभार ज्ञापित किया। संस्कार टीम द्वारा मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

जयपुर।

गौतम चोरड़िया के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक राजेंद्र बांठिया व श्रेयांश बैंगानी ने जैन संस्कार विधि से पूरे विधि-विधान से संपन्न करवाया।

तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, जैन संस्कार विधि के संयोजक बिनीत सुराणा की उपस्थिति रही।

सगाई समारोह

अमराईवाड़ी-ओढव।

बोरियापुर निवासी, अहमदाबाद प्रवासी सुरेश बाफना की सुपुत्री माधुरी और सेवंत्री निवासी एवं मुंबई प्रवासी नरेंद्र कोठारी के सुपुत्र प्रीत की सगाई जैन संस्कार विधि से संस्कारक पंकज डांगी, दिनेश टुकलिया और विकास डांगी ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाई।

संस्कारकों द्वारा बाफना परिवार एवं कोठारी परिवार को धन्यवाद दिया। तेयुप की तरफ से दोनों परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

साहुकारपेट।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेमम के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में भक्तामर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि भक्तामर जैन परंपरा का भक्तिरस से भरा विशिष्ट काव्य है।

साध्वीश्री द्वारा भक्तामर रचना एवं रचयिता प्रभावक आचार्य मानतुंग का जीवन-दर्शन विस्तार से प्रस्तुत किया गया। भक्तामर के उद्भव की कहानी को साध्वीश्री जी के द्वारा सुनकर संपूर्ण परिषद चित्रित-सी हो गई।

मुख्य प्रशिक्षक एवं वक्ता का परिचय हेमलता नाहर ने दिया। मुख्य वक्ता डॉ० मंजु जैन ने रिद्धि मंत्रों के साथ भक्तामर के श्लोकों का उच्चारण कर प्रत्येक श्लोक से होने वाले फायदों पर विस्तृत विवेचन किया। चतुर्थ सत्र पर्सनल काउंसलिंग के रूप में रखा गया। डॉ० मंजु जैन ने संभागियों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान बताया। भक्तामर साधना करने की पूर्ण विधि से परिषद को अवगत कराया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीपमाला भंडारी द्वारा ऋषभ स्तुति के मधुर संगान से हुआ। तेमम की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने मंचासीन महानुभावों एवं धर्मसभा का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन तेमम मंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष उगमराज सांड की उपस्थिति रही। टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़, कार्यक्रम की संयोजिका निर्मला छल्लाणी एवं चेतना बोहरा तथा उनके साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल की पूरी टीम का सहयोग मिला।

महिला मंडल द्वारा कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मंजु जैन, प्रायोजक विजयराज-पुष्पा देवी कटारिया, राकेश खटेड़, चंद्रा, प्रीति लखानी एवं प्रिया का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

राजराजेश्वरी नगर

अभातेममं के निर्देशानुसार 'स्वस्थ परिवार-स्वस्थ समाज' के अंतर्गत तेममं द्वारा 'लेडीज मास्टर हेल्थ चेकअप कैंप' का आयोजन किया गया।

बहनों के स्वास्थ्य हेतु एस०एस० हॉस्पिटल में मास्टर हेल्थ चेकअप करवाया गया। हेल्थ चेकअप के शुभारंभ में अध्यक्ष लता बाफना, मंत्री सीमा छाजेड़, कार्यकारिणी सदस्य ममता दुगड़, कंचन नाहर, पूर्व अध्यक्ष सरोज बैद उपस्थित रही।

बहनों ने अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता दिखाई। चार दिन तक नियमित रूप से चले मास्टर हेल्थ कैंप में हॉस्पिटल के डॉक्टरों एवं मैनेजमेंट वालों का स्पोर्ट रहा। मास्टर हेल्थ कैंप के आयोजन में डॉ० प्रकाश जैन का विशेष सहयोग रहा। मंत्री सीमा छाजेड़ के प्रयास से यह कैंप सफलतापूर्वक समायोजित हुआ।

कोयंबटूर

अभातेममं के तत्त्वावधान में साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा 'परचम सफलता का' कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया की अध्यक्षता में एवं पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सरिता दुगड़ और सेलम कार्यकारिणी सदस्य सुषमा भंसाली की उपस्थिति रही।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला प्रारंभ हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। स्थानीय अध्यक्ष मंजु गिडिया ने राष्ट्रीय सदस्यगण एवं सभी आगंतुकों का स्वागत किया।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने लहरों के माध्यम से बताया कि हम किस तरह लहरों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में सफल हो सकते हैं। अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि सफलता की कोई मंजिल नहीं होती है, व्यवस्थित दिनचर्या वाले अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। कन्या मंडल ने रोचक प्रस्तुति दी।

स्थानीय ज्ञानशाला के बच्चों ने अतीत में तेममं ने क्या सफलताएँ प्राप्त की, उस पर एक प्रस्तुति दी। इसका संचालन ममता पुगलिया ने किया। उपासिका सुशील बाफना ने भाव व्यक्त किए। अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया का सम्मान किया गया। सभा अध्यक्ष उत्तम पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संयुक्त संचालन मंत्री आरती रांका और उपाध्यक्ष मोनिका लुणिया द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री ज्योति सुराणा द्वारा किया गया। कन्या मंडल ने कोयंबटूर बूथ द्वारा अतीत दर्पण की सफल सराहनीय झाँकी प्रदर्शित की। कार्यक्रम का दूसरा चरण रेलवे स्टेशन पर चेयर उद्घाटन का रहा। रेलवे स्टेशन पर संयोजन भावना बोथरा ने किया। चेयर का अनावरण राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया और स्थानीय अध्यक्ष मंजु गिडिया द्वारा किया गया। रेलवे स्टेशन डायरेक्टर एवं मैनेजर आदि अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभा अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। नीलम सेठिया ने विचार व्यक्त किए। यहाँ ११ बैंच महिला मंडल द्वारा वितरित की गई। धन्यवाद ज्ञापन कोषाध्यक्ष सुमित्रा पारेख ने किया। सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल सभी का सहयोग रहा। मोनिका लुणिया, ज्योति सुराणा ने कार्यक्रम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हैदराबाद

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में कन्या मंडल के आयोजकत्व में कार्यक्रम 'इतिहास की परिक्रमा' तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने भिक्षु स्वामी की सुमधुर गीतिका से की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया। कन्या मंडल प्रभारी निशा पींचा ने स्वागत किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद एवं महिला मंडल अध्यक्षा अनीता गिडिया ने कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की। कन्या मंडल संयोजिका प्रार्थना सुराणा ने जजों का परिचय दिया।

ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित नाटिका में कन्याओं के पाँच ग्रुप ने भाग लिया। निर्णय जजों एवं ऑडियंस के पॉयंट्स के माध्यम से किया गया। प्रथम मैना सुंदरी और रोहिणेय चोर ग्रुप, द्वितीय शालिभद्र ग्रुप, तृतीय नेमीनाथ राजुल ग्रुप को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में महिला मंडल के मंत्री श्वेता सेठिया, सभा के सहमंत्री धर्मेन्द्र सुराणा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार प्रकट कन्या मंडल सहप्रभारी चंदन कोठारी ने किया।

साहूकारपेट

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के तहत तत्त्वविज्ञ परीक्षा का आयोजन साहूकारपेट सभा भवन में हुआ। कुल ११ परीक्षार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

परीक्षा से पूर्व साध्वीश्री द्वारा मंगलपाठ सुनाया गया। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने परीक्षार्थियों के जिज्ञासा का समाधान किया। तेरापंथ दर्शन तत्त्वज्ञान परीक्षा की संयोजना प्रीति डूंगरवाल के साथ अध्यक्ष पुष्पा हिरण, मंत्री रीमा सिंघवी, सहमंत्री कंचन भंडारी, कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर कार्यसमिति सदस्य सरोज चिप्पड़ उपस्थित थे।

मुंबई

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में स्नेहम प्रोजेक्ट के अंतर्गत महिला मंडल की बहनों के सहयोग से संतोष इंस्टीट्यूट फॉर मेंटली रिटायर्ड चिल्ड्रन, कम्प्यूटर एवं ट्रेडमील का अनुदान दिया गया।

मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष रचना हिरण ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। विले पार्ले महिला मंडल की तरफ से स्वर संगम की विनर रेणु कोठारी ने प्रेरणा गीत के संगान से मंगलाचरण किया। स्कूल कमेटी को स्नेहम प्रोजेक्ट और महिला मंडल के अन्य प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी।

मुंबई सभा के मंत्री दीपक डागलिया ने अपने वक्तव्य से सभी टीचर्स को मोटिवेट किया। स्कूल हेड कंचन पवार ने स्कूल के बारे में, वहाँ चल रहे प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका रेखा कोठारी ने किया।

अध्यात्म की ऊँचाई तक पहुँचाने का सोपान है - अनुष्ठान

विजयनगर।

मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में मुनि प्रियांशु कुमार जी के निर्देशन में दंपति आराधना अनुष्ठान का आयोजन अर्हम भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनि रश्मि कुमार जी ने कई मंत्रों की साधना करवाते हुए उनके महत्त्व को बताया।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि विघ्न-हरण ग्रह-शांति का यह अनुष्ठान एक दुर्लभ अनुष्ठान है। इसमें भाग लेकर व्यक्ति अपने जीवन को सुखी और समृद्ध बना सकता है।

कार्यक्रम में अभातेयुप से प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी एवं उनकी टीम सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य जनों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन परिषद उपाध्यक्ष विकास बांठिया ने किया।

पैंसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन

बीज मंत्रों का जप व्यक्ति को बनाता है शक्तिशाली

कोटा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन के प्रांगण में 'पैंसठिया यंत्र एवं छंद सिद्धि' परिवार सुरक्षा अनुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। विशाल परिषद ने ऊर्जा की अनुभूति की।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि हमारे पूर्वाचार्यों ने कहा—हमारे मणि, मंत्र एवं औषधि में अचिंत्य शक्ति एवं प्रभाव होता है। मणि एवं औषधि आज के युग में किन्हीं कारणों से नकली हो सकती है। हो सकता है उनका ज्यादा प्रभाव न हो किंतु मंत्र आज भी शुद्ध है, शक्तिशाली है, प्रभावशाली है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि विधिपूर्वक किया गया मंत्र जप अनुष्ठान भीतरी ऊर्जा को संबोधित करता है। बीज मंत्रों का जप व्यक्ति को शक्तिशाली तो बनाती है साथ ही आने वाली अनेक प्रकार की बाधाओं से भी बचा लेता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि पैंसठिया यंत्र जिनशासन का प्रभावशाली छंद है। महा ऊर्जाप्रदायक एवं प्रभावशाली है। आध्यात्मिक संपदा के साथ-साथ विघ्न-बाधाओं का निवारण है। प्रतिदिन पैंसठिया छंद का अनुष्ठान होना चाहिए।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि जप आत्म-अनुभव को जागृत करने का अमोघ साधन है। अध्यात्म की शक्ति से रू-ब-रू होने का सरलतम उपाय है—जप।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन किया। जयपुर एवं मुंबई से स्वागत सेठिया एवं ढेलडिया परिवार के भाईयों ने मंगल संगान किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा द्वारा 'पैंसठिया यंत्र-छंद आध्यात्मिक अनुष्ठान' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि क्या आप उच्च ग्रहों का योग चाहते हैं? क्या आप तनावमुक्त जीवन जीना चाहते हैं? क्या आप सफलता की उड़ान चाहते हैं? क्या आप समग्र अनुकूलता चाहते हैं? अनुकूलता चाहे शरीर की हो, मन की हो, भावों की हो या व्यापार जगत की। जीवन की हर समस्या का समाधान करता है।

साध्वीश्री जी ने उपस्थित जनमेदिनी को बताया कि किस तीर्थंकर का जाप करने से क्या लाभ होता है। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात किशोर मंडल ने मंगलाचरण किया। तेरापंथी सभा संस्था अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने अनुष्ठान में समागत जनमेदिनी का स्वागत भाषण से स्वागत किया।

कार्यक्रम में साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। तेरापंथ किशोर मंडल अधिवेशन में भीलवाड़ा किशोर मंडल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं तेरापंथ कन्या मंडल अधिवेशन में भीलवाड़ा कन्या मंडल ने तत्त्वज्ञान प्रोजेक्ट में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने आभार ज्ञापित किया। अनुष्ठान में लगभग १६१ जोड़ों और अन्य श्रद्धालुओं ने भाग लेकर अनुष्ठान को मंगलमय बना दिया।

जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण समारोह

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के द्वारा जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जैन विद्या परीक्षा आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अनेक अवदानों में एक मुख्य अवदान है।

इस वर्ष १२४ विद्यार्थियों ने पहली बार पुरुष वर्ग ने भी सहभागिता दर्ज कराई। इस ६ वर्षीय पाठ्यक्रम को संपूर्ण करके जैन विद्या विज्ञ की उपाधि से विभूषित हेमलता सुराणा को सम्मानित किया गया। संगीता दुगड़ एवं हिना कोठारी को ६८:५ प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर एवं अन्य वरीयता प्राप्त सभी विद्यार्थियों को मैडल से सम्मानित किया गया।

सभाध्यक्ष छतरसिंह सेठिया ने सभी का स्वागत किया। जैन विद्या प्रभारी सीमा जैन एवं सह-प्रभारी संगीता डागा ने भाव व्यक्त किए। तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा, तेममं अध्यक्ष लता बाफना ने शुभकामनाओं प्रेषित की। सीमा जैन ने संचालन एवं संगीता डागा ने आभार व्यक्त किया।

मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

तप है मोक्ष तक ले जाने वाला मार्ग

राजाराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में रंजीता नाहटा ने मासखमण का प्रत्याख्यान किया। साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि तपस्विनी रंजीता ने अनेक उपसर्गों को सहन करते हुए मजबूत मनोबल रखा। दृढ़ हिम्मत रखने वाला ही तप-नाव में बैठ सकता है।

देवरानी सोनल ने एकासन का मासखमण किया है। सजोड़े पंचोला तप से शिल्पा-अशोक कोठारी ने तप की अनुमोदना की। साध्वीवृंद ने गीतों से वर्धापना की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी द्वारा प्रदत्त मंगल शुभकामना संदेश का वाचन किया गया। तेरापंथ सभा द्वारा तप-अभिनंदन पत्र का वाचन किया गया। सभाध्यक्ष छतरसिंह सेठिया, तेमम अध्यक्ष लता बाफना, तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने तप अनुमोदना की।

परिवार की बहनों, तेयुप, तेमम द्वारा तप-गीत प्रस्तुत किए। संयोजन सभा के मंत्री हेमराज सेठिया ने किया।

साहूकारपेट, चेन्नई

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मासखमण तप साधिकाएँ दीपिका सेठिया, संगीता भटेवरा एवं रिंकी बैद का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर ने कहा है करोड़ों भव के संचित कर्म तप से समाप्त हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि वास्तविक तप वह होता है जिस तप के साथ, स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि की विशेष साधना हो। मासखमण-रत तीनों बहनों ने पूर्ण मानसिक संकल्प और मनोबल के साथ, अध्यात्म आराधना के साथ सानंद अपनी मंजिल पा ली है।

महिला मंडल ने मंगल तप की अभिवंदना की। तिरुवन्नामले परिवार की बहु दीपिका को दीया एवं परिवार की बहनों ने शुभकामनाएँ दी। मासखमण तपरत संगीता भटेवरा के प्रति बेटी प्रियंका ने उद्गार व्यक्त किए। भटेवरा और बरड़िया परिवार ने गीत का संगान किया। महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने तपस्विनी बहनों का परिचय दिया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेशों का वाचन तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष एम०जी० बोहरा एवं सभा के सहमंत्री मनोज गादिया ने किया। तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड की ओर से विमल चिप्पड़ ने स्वागत व्यक्त किए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जैन महासंघ के पूर्वाध्यक्ष पन्नालाल सिंघवी, तेरापंथ महासभा की ओर से ज्ञानचंद आंचलिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष उरामराज सांड सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

साध्वीवृंद ने तप-अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। मंच संचालन साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने किया। सभा के मंत्री अशोक खतंग ने आभार व्यक्त किया।

कांदिवली

सायन कोलीवाड़ा निवासी २२ वर्षीय सुश्री मुस्कान सुपुत्री राजेश-रेखा धाकड़ ने कांदिवली तेरापंथ भवन में मासखमण-३१ दिन के तप का प्रत्याख्यान कर एक नए इतिहास का सृजन किया है। इंजीनियर धाकड़ की यह तपस्या युवी पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है। मैं इसे इस विशिष्ट तप के लिए बहुत-बहुत साधुवाद देती हूँ। इसके माता-पिता एवं भाई-बहन भी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने ऐसे तप में सहयोग किया है। साध्वी निर्वाणश्री जी ने तप का प्रत्याख्यान करवाते हुए ये उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा- "प्यारचंद एवं चांदीबाई के परिवार को आज बहुत-बहुत बधाई देते हैं जिनके परिवार से मुस्कान ने विशिष्ट तप की शृंखला में अपना नाम लिखवाया है। जैन शासन तप के क्षेत्र में अग्रणी है।"

साध्वीवृंद की ओर से सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति हुई। श्रीमती रतन बाफना, श्रीमती पुष्पा बाफना, नवनीत कच्छरा, चतर, सिंघवी, संपत चंडालिया, मदन बडाला आदि ने तप का संकल्प स्वीकार कर उसके तप की अनुमोदना की। स्थानीय सभा के पदाधिकारियों ने आचार्य तुलसी स्मृति ग्रंथ का उपहार देकर वर्धापना की। इस अवसर पर स्थानीय सभा की ओर से कांदीवली सभा मंत्री अशोक हिरण, तेयुप अध्यक्ष नवनीत कच्छारा, महिला मंडल की ओर से अरुणा चोरडिया, हस्तीमल भंडारी, चतर सिंघवी, भीमराज ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

तपस्विनी के पारिवारिक जन-राकेश, रेखा एवं रजत ने साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञाप्ति की। सूरत से समागत उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने अपने भावों की प्रासंगिक अभिव्यक्ति दी।

जोरावरपुरा

तेरापंथ भवन में मासखमण तप का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विशेष जप अनुष्ठान से की गई। जोरावरपुरा भवन में विनोद नौलखा ३३ की और निशा मरोठी ने ६ की तपस्या का अभिनंदन कार्यक्रम साध्वी सूरजप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तप करना सरल नहीं बड़ा ही कठिन कार्य है, अपनी रसना को बस में रखना कोई वीर पुरुष ही कर सकता है। तपस्या करके व्यक्ति मोक्षगामी बन सकता है। तप अपनी इंद्रियों पर विजय पाना है। डॉ० लावण्ययशा जी ने कहा कि तप से व्यक्ति के भीतर पनप रही बीमारियों को दूर भगाया जा सकता है।

साध्वी विधिप्रभा जी, साध्वी नैतिकप्रभा जी ने तप की अनुमोदना अपने भावों के माध्यम से प्रेषित की। मरोठी परिवार, नौलखा परिवार और महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। महिला मंडल से मोनिका बुच्चा ने तप का अभिनंदन किया। सभा अध्यक्ष भीखमचंद मरोठी, मंत्री निर्मल बुच्चा, विजयराज बैद, बाबूलाल बुच्चा आदि ने साहित्य द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश वाचन तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार बुच्चा ने किया। कार्यक्रम का संचालन डिम्पल बैद ने किया।

ठाणे

चातुर्मास प्रारंभ के पश्चात तीसरा मासखमण तप अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। तेमम द्वारा तपस्या की अनुमोदना एवं मंगलाचरण के रूप में गीतिका प्रस्तुत की। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में और प्रेरणा से नवरतन दुगड़ ठाणे निवासी का एक मास का तप संपन्नता की ओर है। तपस्वी नवरतन दुगड़ ने कई बार ८,९ ११, १५ की लंबी तपस्याएँ की हैं व पूर्व में एक मासखमण किया है। साध्वीश्री जी ने उद्बोधन दिया।

साध्वीवृंद ने कविताओं में पिरोया शब्दचित्र प्रस्तुत किया। दुगड़ परिवार से पुत्र लोकेश, पुत्री पूजा, पुत्रवधू नूतन, पायल पौत्र नक्ष, संजय, कमलेश, आयुषी के स्वर और बाल गायक पार्थ एवं सभी बहुओं की ओर से अनुमोदना गीतिका प्रेषित की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश वाचन सभाध्यक्ष रमेश सोनी एवं ठाणे सभा द्वारा प्रेषित सम्मान पत्र का वाचन कोषाध्यक्ष कमलेश चंडालिया ने किया। संपूर्ण समाज की ओर से तपस्वी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री राजू बाफना ने किया। सभा के द्वारा सभी के प्रति आभार प्रकट किया गया।

ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम

जीवन की सच्ची पाठशाला है ज्ञानशाला

मदुरै

स्थानीय तेरापंथ भवन में पर्युषण पर्व के अंतर्गत धर्म आराधना कराने पधारे उपासक बिनोद कोठारी एवं उपासक भंवरलाल मांडोत ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को नमस्कार महामंत्र का महत्त्व बताया एवं कहानी के माध्यम से लालच करना बुरी बात है, समझाया।

आध्यात्मिक ज्ञान के साथ विनय और व्यवहारिक ज्ञान भी जिंदगी में होना बहुत जरूरी है। यह प्रेरणा ज्ञानशाला के बच्चों को दी। कार्यक्रम में काफी बच्चे उपस्थित थे। ज्ञानशाला संयोजिका लता कोठारी ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी।

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। ज्ञानार्थी कुशाग्र मालू ने महावीर स्तुति से मंगलाचरण किया।

साध्वी पीयूषप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने बच्चों में संस्कार निर्माण, सद्ज्ञान के लिए माध्यम की परिकल्पना की और वह माध्यम बना ज्ञानशाला। ज्ञानशाला संस्कारों की वह प्रयोगशाला है जो भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है। तेजी से बढ़ रहे युग में सही समय सही संस्कार दिए जाएँ। बच्चों में देव, गुरु, धर्म का ज्ञान और इनके प्रति श्रद्धा कैसे प्रगाढ़ हो, इसका प्रशिक्षण मिलना चाहिए।

ज्ञानार्थी मीत भूतोड़िया और रिद्धिमा सुराणा ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी दीप्तियशा जी ने कहा कि ज्ञानशाला भौतिकता व कुसंस्कारों के अंधेरे में एक दीपक के प्रकाश के समान है। कार्यक्रम में बच्चों की उपस्थिति के साथ ही तेयुप के अध्यक्ष दिलीप मालू, मंत्री मनीष सेठिया, टीकमचंद सेठिया, चंपालाल सेठिया, पूर्व अध्यक्ष पूनमचंद सुराणा आदि उपस्थित थे।

गंगाशहर

साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला कार्यक्रम आयोजित किया गया। सर्वप्रथम ज्ञानशाला के बच्चों ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके बाद बच्चों ने पर्युषण महापर्व के विभिन्न दिनों को रोचक ढंग से वाद-संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया। कषाय मुक्ति पर ज्ञानशाला के बच्चों ने एक नाटक की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वीश्री ने मंगल पाथेय प्रदान किया।

ज्ञानशाला सहप्रभारी चैतन्य रांका ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन भाविका सामसुखा ने किया।

संदीप रांका, प्रशिक्षिका भाविका सामसुखा, मोनिका संचेती, मुदिता डाकलिया आदि की युवा टीम ने कार्यक्रम को धरातल पर उतारा। तेरापंथी सभा, तेयुप और तेमम की टीम का सक्रिय सहयोग रहा।

कांकरोली

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा की ओर से ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम से पूर्व ज्ञानशाला के बच्चों की रैली निकाली गई। रैली नया बाजार के तेरापंथ भवन से प्रारंभ होकर प्रज्ञा विहार तेरापंथ भवन में पहुँची तथा बाल परिषद में परिणत हो गई।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के मंत्री विनोद चोरड़िया ने सभा की ओर से अतिथियों का स्वागत किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि आज हम ज्ञानशाला दिवस मना रहे हैं। ज्ञानशाला एक ऐसा मंदिर है जिसमें ज्ञान तो दिया जाता ही है इसके साथ बच्चों को अच्छे संस्कार भी दिए जाते हैं। आज जरूरत है बालकों को प्रारंभ से ही सुसंस्कार के बीज वपन हो।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका वर्ग ने गीत प्रस्तुत किया। बच्चों द्वारा लघु नाटिका एवं कव्वाली भी प्रस्तुत की गई। तेरापंथ सभा द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के श्रम एवं समय की प्रशंसा करते हुए सभी को सम्मानित किया गया।

पच्चीस बोल के कुछ बोल छोटे से बच्चे युवान तलेसरा, हीरल तलेसरा ने भक्तामर को शुद्ध उच्चारण से तथा माही पगारिया ने प्रतिक्रमण बड़े व्यवस्थित रूप से सुनाया।

तेरापंथ सभा की ओर से शिशु संस्कार बोध की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों तथा ऑनलाइन पर चलने वाले प्रतिक्रमण भक्तामर आदि की प्रश्नोत्तरी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी बच्चों को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया। ज्ञानशाला दिवस के अन्य प्रायोजक पारसमल का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम की मुख्य संयोजिका मंजु दक, पारसमल पितलिया, विनोद बड़ाला, सहमंत्री सूरत जैन, महेंद्र, महिला मंडल अध्यक्ष इंदिरा पगारिया आदि कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बाबूलाल ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के अवलोकन का पर्व है - पर्युषण महापर्व

कांकरोली।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में जैन धर्म का प्रमुख पर्व पर्युषण पर्व प्रारंभ हुआ। खाद्य संयम दिवस साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ किया। महिला मंडल की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने पर्युषण पर्व की पवित्र आराधना कैसे करें तथा पर्युषण पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला। भोजन-पानी शरीर संचालन का प्रमुख माध्यम है। इसके बिना कोई भी प्राणी लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता है। पर भोजन कितना करना, कैसे करना, किस समय करना आदि तथ्यों का बोध होना बहुत जरूरी है।

साध्वीश्री जी ने एक गीत प्रस्तुत कर 'खाद्य संयम' की सद्प्रेरणा दी। साध्वीश्री जी ने कुछ नियम को पूरी परिषद को दिलवाए।

साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी चारूप्रभा जी एवं साध्वी इंदुप्रभा जी ने गीत, भाषण के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। सभा के मंत्री विनोद चोरड़िया ने व्यवस्था आदि के बारे में जानकारी दी।

स्वाध्याय दिवस : स्वाध्याय दिवस पर तेरापंथ सभा के सदस्यों ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने पहले जैन धर्म के चौबीसवें भगवान महावीर के पूर्व भवों के बारे में बताया। स्वाध्याय दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि स्वाध्याय का अर्थ है—स्वयं का विशेष अध्ययन तथा अध्यापन करना। ज्ञान प्राप्ति का यह अमोघ साधन है।

साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने स्वाध्याय पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी चारूप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया।

सामायिक दिवस : अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप की ओर से अभिनव सामायिक का सामूहिक आयोजन हुआ। साध्वीश्री जी ने पूरी विधिवत् अभिनव सामायिक करवाई।

तेयुप के युवा साथियों ने सामायिक विषय पर गीत प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि सामायिक शब्द अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है। सामायिक तनावमुक्ति का सफल उपाय है। सामायिक का अर्थ है—समता भाव में रमण करना। सामायिक संवर और आत्म-शोधन दोनों की संयुक्त प्रक्रिया है। सामायिक शुद्ध, सरल, अध्यात्म का एक सक्षम प्रयोग है। सामायिक करने वाला व्यक्ति अपने कृत कर्मों की आलोचना कर आत्मशुद्धि करता है।

इस अवसर पर विनोद बड़ाला एवं तेयुप के अध्यक्ष निखिल कच्छारा, दीपक सिंघवी ने आगामी कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी। साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी चारूप्रभा जी एवं साध्वी इंदुप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

वाणी संयम दिवस : इस अवसर पर सामूहिक पार्श्वनाथ की स्तुति का संगान किया गया। धोइंदा गाँव की महिला मंडल की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने वाणी संयम पर कहा कि भगवान महावीर ने भाषा के दो प्रकार बताए हैं—भाषा समिति और वचन गुप्ति। विवेकपूर्ण बोलना भाषा समिति कहलाता है और भाषा पर पूर्ण संयम करना वचन गुप्ति कहलाता है।

भाषा की तीन कसौटियाँ हैं—सत्य, संयम और प्रिय वचन। इन तीनों पर जो खरी उतरती है, वही भाषा सम्यक् भाषा है। यह भाषा स्वयं के लिए और दूसरों के लिए सदा सुखकारी बनती है।

साध्वी चिन्मयप्रभा जी एवं साध्वी चारूप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वी इंद्रप्रभा जी ने वाणी संयम पर अपने भाव व्यक्त किए। सभी साध्वियों ने एक सामूहिक गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

जप दिवस : साध्वीवृंद ने पार्श्वनाथ की मंगल स्तुति की। टीपीएफ के युवक-युवतियों ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि किसी मंत्र का एकाग्रता से किया हुआ जप आंतरिक ऊर्जा को जागृत करता है। जप यदि उपयुक्त आसन मुद्रा तथा अनुरूप चित्त एकाग्रता से किया जाए तो निश्चित उसकी अद्भुत निष्पत्ति मिलती है। साध्वीश्री जी ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने जप क्यों? कैसे? और कब करना? इस विषय पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी चारूप्रभा जी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

तेयुप के भूपेंद्र चोरड़िया एवं सभा के विनोद बड़ाला ने आगामी कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी।

संवत्सरी महापर्व : साध्वी मंजुयशा जी ने संवत्सरी महापर्व पर कहा कि आज हम संवत्सरी महापर्व मनाने इकट्ठा हुए हैं। आज का पर्व आत्मदर्शन, अंतर चेतना के जागरण का पर्व है। सात दिन तक इसे जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान आदि साधना के द्वारा मनाया। सचमुच ये महापर्व वर्तमान को सुधारता है और भविष्य के लिए कुछ नए शुभ संकल्प संजोता है। मैत्री और प्रमोद भावना व सौहार्द को बढ़ाने वाला यह पर्व है। यह महापर्व जैन शासन का अलौकिक पर्व है। आत्मावलोकन का यह महापर्व भीतर की बैर भावना का, कलुषता की भावना का परिष्कार कर आत्म विशुद्धि को प्राप्त करने का पर्व है। साध्वीश्री ने गीतिका का संगान साध्वीवृंद के साथ किया।

साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने भगवान महावीर के साधना काल में आगे वाले, परिषहों एवं मनुष्य द्वारा तिर्यंच द्वारा एवं देवों द्वारा दिए गए कष्टों के बारे में अनेक रोचक प्रसंग सुनाए तथा जैन धर्म के महाप्रभावक आचार्य तथा तेरापंथ के यशस्वी आचार्यों के जीवन-वृत्त को समझाया।

साध्वी इंदुप्रभा जी ने प्रारंभ में ठाणां सूत्र के आधार पर आध्यात्मिक उपदेश दिया तथा भगवान महावीर के समय में होने वाले ११ गणधर एवं ७ निन्हव के जीवन-वृत्त की जानकारी दी। साध्वी चारूप्रभा जी ने मुक्तक प्रस्तुत किए।

क्षमायाचना का सामूहिक कार्यक्रम हुआ। उसमें सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने आपसी प्रेम-सौहार्द से एक-दूसरे से तथा सभी साध्वीवृंद से एवं साध्वीवृंद ने भी सभी संस्थाओं से, कर्मचारियों से, परिवार वालों से अंतःदिन से हार्दिक क्षमायाचना की।

शपथ ग्रहण समारोह

सरदारशहर।

तेयुप, सरदारशहर के सत्र-२०२२-२३ के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी सुमतिप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। तेयुप के पूर्व अध्यक्ष राजीव दुगड़ ने वर्तमान अध्यक्ष विकास बोथरा एवं मंत्री धीरज छाजेड़ को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। उसके बाद तेयुप के समस्त पदाधिकारियों सहित संपूर्ण कार्यकारिणी को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

साध्वी सुमतिप्रभा जी ने उत्तम कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए, उसके बारे में उदाहरण देकर बताया। साध्वीश्री जी ने कहा कि कार्यकर्ता में सहनशीलता का गुण जरूर होना चाहिए। श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

आत्म-आराधना और जितेंद्रिय साधना का पर्व है

चेन्नई।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व धूमधाम से मनाया गया।

खाद्य संयम दिवस : साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जैन और सनातन दोनों परंपरा में भाद्रव का विशेष महत्त्व है। पर्युषण महापर्व के प्रति संपूर्ण जैन समाज में परंपरागत श्रद्धाभाव है। आत्माभिमुखी बनने का संकल्प लेकर साधर्मिकों को धर्म ध्यान में सहभागी बनना चाहिए। यह पर्व आत्म निरीक्षण और आत्म परीक्षण का पर्व है।

साध्वी सिद्धियशा जी ने भगवान महावीर और पर्युषण संवाद प्रस्तुत किया। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने अध्यात्म और विज्ञान की दृष्टि से खाद्य संयम दिवस पर विवेचन किया। साध्वीवृंद ने गीत का सामुहिक संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उगमराज सांड ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। संचालन साध्वी राजुलप्रभा जी ने किया।

स्वाध्याय दिवस : साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि स्वाध्याय आत्महित की प्रेरणा देता है। आगम साहित्य में ध्यान के साथ स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी गई है।

परिवार, समाज और व्यक्तिगत जीवन में सौहार्द, सम्मान, प्रेम की भावना होनी चाहिए, साध्वीश्री जी ने संपूर्ण परिषद को जैन दर्शन, तत्त्व दर्शन, आगम दर्शन, तेरापंथ दर्शन भार्दिक स्वाध्याय की प्रेरणा दी। साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने कहा कि अच्छे विचारों का चिंतन करना भी स्वाध्याय है। साध्वी रिद्धियशा जी और साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने आत्मा और कषाय का संवाद प्रस्तुत किया। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने संचालन किया।

सामायिक दिवस : साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि समता का स्वीकरण और ममता का त्याग सामायिक है। जीवन में आने वाले द्वंद्वों में सम रहना ही सामायिक है। सामायिक साधक, सामायिक साधना से छह काय के जीवों को अभयदान देता है।

कार्यक्रम की शुरुआत युवक परिषद के संगान से हुई। साध्वीवृंद ने 'कर्मों की कहानी, हमारी जुबानी' कार्यक्रम की प्रेरक प्रस्तुति दी तथा सामुहिक गीत का गान किया। तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी ने विचार व्यक्त किए। संचालन साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने किया।

वाणी संयम दिवस : वाणी संयम दिवस पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि जीवन की यात्रा में अनेक महत्त्वपूर्ण घटक तत्त्वों में वाणी मुख्य है। बिना भाषा के व्यवहार नहीं चलता। ज्ञानी वह जो बोलने से पहले सोचता है, बोलने के बाद सोचने वाला अज्ञानी कहलाता है।

तेरापंथ किशोर मंडल ने मंगलाचरण किया। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। साध्वीवृंद ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने संचालन किया।

अणुव्रत चेतना दिवस : कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल द्वारा की गई। साध्वीवृंद ने अणुव्रत अनुशास्ता गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित गीत का संगान किया। व्रत चेतना का विकास होना चाहिए। जैन साधना पद्धति का मुख्य आधार व्रत है। गुरुदेवश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत आंदोलन ने तेरापंथ को ख्याति प्रदान की है।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत सूर्य जन-जन के मार्ग को रोशन कर रहा है। जरूरत है हर व्यक्ति अणुव्रत को समझे और स्वीकार कर जीवन को सार्थक दिशा दे। संचालन डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने किया।

जप दिवस : पर्युषण पर्व के दौरान साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने भगवान महावीर जीवन दर्शन पर विस्तृत विवेचन किया। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से चेन्नई के घरों में प्रतिदिन चातुर्मास काल तक १३ घंटे जप-आराधना की व्यवस्था की गई है।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने तुलसी स्तुति की। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि एकाग्रता और शुद्ध उच्चारण के साथ जप करना चाहिए। जप द्वारा आत्मा को उज्ज्वल और शक्ति-संपन्न बनाया जा सकता है। साध्वीवृंद ने परमेष्ठी-संगान किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने मंच संचालन किया।

ध्यान दिवस : साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा भगवान महावीर के २७ भवों की श्रवण प्रिय, प्रेरणादायी भव्य प्रस्तुति से श्रावक समाज मंत्रमुग्ध बना रहा। जैन परंपरा में ध्यान का प्रमुख स्थान रहा है। ध्यान की प्रायः विलुप्त व ध्यान पद्धति को आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने पुनर्जीवित किया।

टीपीएफ द्वारा महाश्रमण अभिवंदना की गई। साध्वीवृंद ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शौर्यप्रभा जी ने किया।

संवत्सरी महापर्व : साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि संवत्सरी जैन परंपरा का सिरमोर पर्व है। आत्मचिंतन, आत्ममंथन, आत्मदर्शन वाला यह अलौकिक महापर्व है।

महिला मंडल ने मधुर संगान किया। साध्वी राजुलप्रज्ञा जी ने चुनिंदा प्रभावक आचार्यों के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने गणधर परंपरा एवं निस्तव परंपरा की यात्रा करवाई। साध्वी सिद्धियशा जी ने तेरापंथ आचार्यों के एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने तेरापंथ की साध्वीप्रमुखा के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की। जय तुलसी मंडल, महिला मंडल एवं राकेश मांडोत ने गीत प्रस्तुत किए। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

क्षमायाचना दिवस : साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने क्षमायाचना समारोह में कहा कि आज निर्भार होने का दिन है। अतीत की पीड़ित करने वाली यादों को मस्तिष्क से उतारने का दिन है। आवश्यकता है हर व्यक्ति सरलता से एक-दूसरे को क्षमा करे। प्रायोगिक बने। आत्मा को उज्ज्वल और पवित्र बनाएँ। संपूर्ण चातुर्मास कालीन भव तक आराधना गुरुभक्ति से सानंद संपन्न हुई। साध्वीवृंद ने मैत्री गीत का संगान किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष विमल कुमार चिप्पड़, महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा हिरण, तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, जैन तेरापंथ विद्यालय के चेयरमैन छगनलाल धोका, अणुव्रत समिति की ओर से गौतम सेठिया, पर्युषण पर्व संयोजक राजेंद्र माधलिया, टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विचार व्यक्त करते हुए क्षमायाचना की। कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

✦ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।
– आचार्यश्री महाश्रमण

मेगा ब्लड डानेशन ड्राईव 2022 की झलकियां

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ यदि धार्मिकता की भी प्राथमिकता रहे तो जीवन संतुलित रह सकता है और धन पर धर्म का अंकुश भी रह सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

You have, you can...
MEGA BLOOD DONATION DRIVE
An Initiative By Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad
17th September 2022

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE | सत्यमेव जयते
आज़ादी का अमृत महोत्सव
Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad
INDIAN RAILWAYS

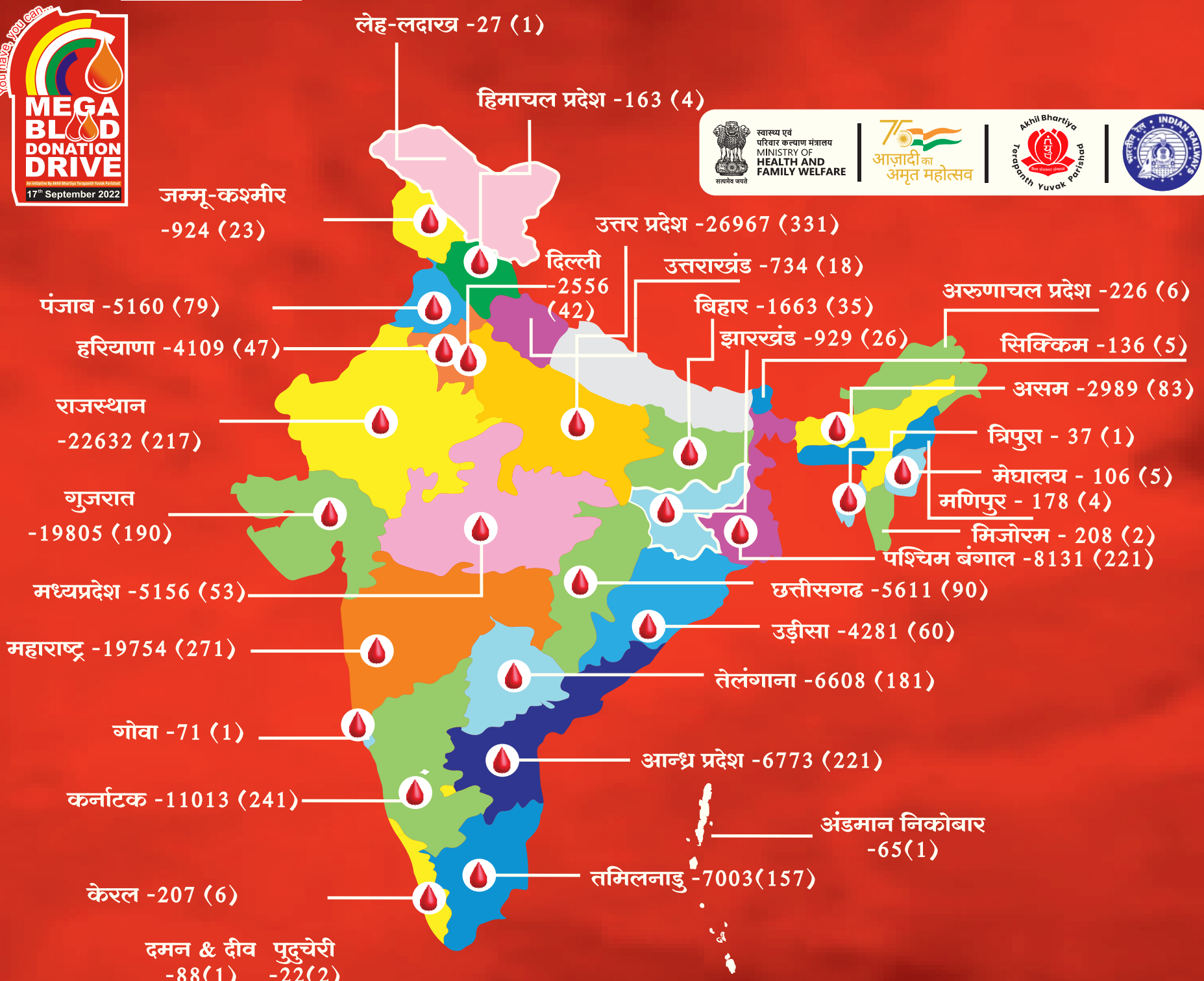

2696 रक्तदान शिविर 166539 रक्त युनिट

प्राप्त जानकारी के अनुसार 17 सितम्बर 2022 को भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान अमृत महोत्सव के अंतर्गत मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव 2022 में भारत के सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में आयोजित 2696रक्तदान शिविरों में 166539 यूनिट संग्रह कर नवइतिहास का सृजन किया।

कशमीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कटक तक भारत के सभी महानगरों, नगरों, कस्बों, ढाणियों, दुर्गम रेगिस्तान के साथ सुदूर दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों जैसे लेह-लद्दाख, उत्तराखंड के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र, जैसलमेर-बाड़मेर के रेगिस्तानी क्षेत्र आदि में आयोजित रक्तदान शिविरों पर रक्तदाताओं में रक्तदान के प्रति भारी उत्साह देखने को मिला। देश के अनेक राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों प्रमुख संस्थानों एवं धार्मिक आस्था के केंद्रों में भी रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों में पूरे देश भर से राजनेताओं, अभिनेताओं, राजकीय सेवा में सेवारत विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों, खेल व सिनेमा जगत से जुड़ी विभिन्न हस्तियों, उद्योग जगत से जुड़े व्यवसायियों ने शिविरों में पहुंचकर रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया।

JM जयश्री JAISHREE
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड

विदेशों में आयोजित रक्तदान शिविर

Nepal | Mauritius | Thailand | Singapore | Hongkong | Afghanistan | Indonesia

Sri Lanka | Myamar | Benin | Maldives | Senegal | Mali | Texas

Qatar | Australia | Canada | North Carolina | Panama | Oman | Bangladesh

Yemen | United Kingdom | Maxico | Togo | Turkey | Vietnam | Gambia

Norway | Spain | Guine Bissau | Chad | Germany | Botswana | Ku[redacted]it

Burma | Colombia | Berlin

38 देश 68 शिविर
2139 रक्त यूनिट

OLD UNION
THANGA HOUSE
ANTISPOT

श्री उम्मेद सिंह, प्रशान्त, तनय बोकडिया (लाडनूँ-चेन्नई)

✦ एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव (MBDD) 2022 की प्रमुख उपलब्धियां

01. प्रथम बार अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का भारत-सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविरों का आयोजन।
02. प्रथम बार कश्मीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कटक तक भारत के सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में उत्साह के साथ 2696 रक्तदान शिविरों के आयोजन में 166539 यूनिट रक्त संग्रह का रचा गया इतिहास।
03. प्रथम बार विदेशी धरती पर किसी भारतीय संगठन के आह्वान पर भारत के अतिरिक्त 38 देशों में 68 से अधिक स्थानों पर रक्तदान शिविरों का आयोजन।
04. प्रथम बार अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अंतर्गत रक्तदाता का रजिस्ट्रेशन सरकारी वेबसाईट ई-रक्तकोष www.eraktkosh.in पर।
05. प्रथम बार भारत सरकार की वेबसाईट ई-रक्तकोष व आरोग्य सेतु एप्प पर एम.बी.डी.डी. का बैनर और लोगो (प्रतीक चिन्ह) का उपयोग किया गया।
06. प्रथम बार रेल मंत्रालय के निर्देश पर भारत के विभिन्न मेट्रो स्टेशन एवं रेलवे स्टेशनों पर 7000 से अधिक स्क्रीन पर लगभग एक सप्ताह तक नियमित रूप से एम.बी.डी.डी. की प्रेरणात्मक विशेष विडियो क्लिपिंग का प्रसारण।
07. भारतीय रेलवे की वेबसाईट www.irctc.co.in पर एम.बी.डी.डी. का प्रचार-प्रसार।
08. प्रथम बार एम.बी.डी.डी. के अंतर्गत केन्द्रीय मंत्रियों ने किया रक्तदान।
09. प्रथम बार एम.बी.डी.डी. के माध्यम से मुस्लिम देशों जैसे अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों में विभिन्न प्रचार माध्यमों एवं रक्तदान शिविरों के आयोजन से पहुंचा तेरापंथ धर्मसंघ और आचार्यश्री महाश्रमण का नाम।
10. प्रथम बार खेल एवं सिनेमा जगत की विभिन्न हस्तियों द्वारा अपने वाट्सएप्प, टेलिग्राम, फेसबुक, ट्विटर हैण्डल द्वारा समर्थन एवं इसके माध्यम से 60 करोड़ से भी अधिक फॉलोवर्स के बीच पहुंचा एम.बी.डी.डी.।
11. विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा और महामंत्री श्री तरूण चुग द्वारा विडियो संदेश जारी कर अपने सभी कार्यकर्ताओं को किया रक्तदान के लिए प्रेरित।
12. प्रथम बार एम.बी.डी.डी. के लिए रेलवे पुलिस फोर्स ने अधिकारिक आदेश जारी किया रेलवे पुलिस फोर्स के जवानों को स्वैच्छिक रक्तदान का लिखित आदेश।
13. प्रथम बार केन्द्र सरकार द्वारा रक्तदाताओं को जारी प्रमाण-पत्रों में अभातेयुप का लोगो (प्रतीक चिन्ह) एवं नाम का उल्लेख।
14. प्रथम बार अभातेयुप के बैनर तले ऐसे प्रदेशों में भी रक्तदान शिविरों का आयोजन जहां तेरापंथ युवक परिषद एवं परिवारों की उपस्थिति नगण्य अथवा नहीं है।
15. इस रक्तदान अभियान के माध्यम से लगभग 1000 से अधिक ब्लड-बैंक का ई-रक्तकोष सरकारी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन।
16. देश की प्रमुख ऐतिहासिक एवं विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों एवं स्मारकों पर रक्तदान शिविर हेतु प्रचार-प्रसार एवं शिविरों का आयोजन।
17. देश के शीर्ष राजनेता, अभिनेता, कॉर्पोरेट्स, उद्योगपति आदि द्वारा समर्थन एवं रक्तदान हेतु प्रेरणा।
18. सार्वजनिक हित एवं मानवता की सेवा के लिए चलाए गए अभियान को अनेक धर्मगुरुओं के प्राप्त हुए आशीर्वचन एवं शुभकामना संदेश।
19. दूरदर्शन सहित विभिन्न टी.वी. चैनलों द्वारा अभातेयुप के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, संयोजकों एवं स्थानीय तेरापंथ युवक परिषदों के अध्यक्ष, मंत्रियों का लाइव साक्षात्कार।
20. देश-विदेश के नगरों, महानगरों एवं कस्बों के व्यस्ततम मार्गो, चौराहों, सरकारी एवं गैर सरकारी इमारतों, भवनों, मॉल्स आदि पर बैनर, हॉर्डिंग्स आदि के द्वारा प्रचार-प्रसार।
21. अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार के कारण कुल रक्तदाताओं में से 20 प्रतिशत से अधिक रक्तदाताओं द्वारा प्रथम बार रक्तदान।
22. देश के विभिन्न शहरों में प्रेस-कॉन्फ्रेंस आयोजित कर रक्तदान की व्यापक जानकारी के साथ एम.बी.डी.डी. का प्रचार-प्रसार।
23. अनेकों सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रचार-प्रसार एवं रक्तदान शिविरों का आयोजन।
24. विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों आदि शैक्षणिक संस्थानों का सक्रिय सहयोग एवं समर्थन।
25. रेलवे सुरक्षा बल, पुलिस प्रशासन, सीमा सुरक्षा बल आदि का विशिष्ट सहयोग एवं समर्थन।
26. गुवाहाटी में असम के महामहिम राज्यपाल प्रोफेसर जगदीश मुखी द्वारा राजभवन में रक्तदान शिविर का आयोजन।
27. देहरादून में पुलिस लेन में आयोजित रक्तदान शिविर में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्करसिंह धामी, स्वास्थ्य मंत्री श्री धनसिंह रावत आदि की गरिमामयी उपस्थिति, डी.आई.जी. श्री करण नागन्याल द्वारा रक्तदान।
28. कोलकाता में विक्टोरिया मैमोरियल में रक्तदान शिविर का आयोजन। स्वास्थ्य मंत्री की उपस्थिति। सीआरपीएफ के साथ शिविर का आयोजन
29. अहमदाबाद में आयोजित रक्तदान शिविर में गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र भाई पटेल की गरिमामयी उपस्थिति।
30. बैंगलोर विधानसभा में रक्तदान शिविर का आयोजन एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री डी. के. सुधाकर की रही उपस्थिति।
31. गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र नदी में जहाज पर रक्तदान शिविर।
32. जोधपुर में वायु सेना के साथ रक्तदान शिविर का आयोजन।
33. स्टेच्यू ऑफ यूनिटी में रक्तदान शिविर का आयोजन।
34. इटानगर में सी.आर.पी.एफ. 138 बटालियन में रक्तदान का शिविर का आयोजन।
35. देश के अनेक नगर-निगमों एवं नगरपालिकाओं की गाड़ियों पर रक्तदान के बैनर, पोस्टर आदि द्वारा प्रचार-प्रसार।
36. रेल, बस, ट्रक, ऑटो-रिक्शा आदि यातायात के साधनों पर रक्तदान के बैनर, पोस्टर, स्टिकर आदि से प्रचार-प्रसार।
37. ऑफिस बिल, स्टेशनरी, सूचना पट्ट, आई.सपोर्ट, होटल-रेस्टोरेन्ट्स के बिलों आदि पर एम.बी.डी.डी. वाटरमार्क द्वारा प्रेरणा।
38. टी-शर्ट, साड़ी, जैकेट्स, कुर्ते, दुपट्टे, आदि विभिन्न परिधानों द्वारा रक्तदान हेतु प्रचार-प्रसार।
39. बालिकाओं एवं महिलाओं द्वारा मेहन्दी प्रतियोगिता, नेल पेन्ट एवं टेटू से रक्तदान हेतु प्रचार-प्रसार।
40. रक्षा-बन्धन पर भाई-बहनों द्वारा रक्तदान का संकल्प।
41. गणेशोत्सव, जन्माष्टमी एवं अन्य धार्मिक आयोजनों में बैनर, पोस्टर एवं हॉर्डिंग्स लगाकर रक्तदान को प्रोत्साहन।
42. विभिन्न स्थानों पर तेरापंथ किशोर मण्डल एवं कन्या मण्डल द्वारा नुक्कड़ नाटकों का आयोजन कर रक्तदान की प्रेरणा।
43. देश के विभिन्न शहरों में बाइक एवं कार रैली तथा मैराथन-दौड़ का आयोजन कर रक्तदान की प्रेरणा।
44. एम.बी.डी.डी. के कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न नदियों एवं समुद्र-तटों पर स्वच्छता अभियान चलाकर रक्तदान को प्रोत्साहित करने का प्रयास।
45. आकाशवाणी एवं एफ.एम. रेडियो द्वारा नियमित प्रचार-प्रसार।
46. देश के प्रमुख न्यूज चैनलों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं में व्यापक कवरेज के साथ समाचारों का प्रसारण व प्रकाशन।
47. रक्तदान को प्रोत्साहित करने हेतु रक्तदान-गीतों का विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लॉन्चिंग।
48. दुकानों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों एवं बाजारों में बैनर आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार।
49. सरकारी, गैर-सरकारी भवनों, इमारतों, मॉल्स, ब्लड बैंक आदि में रक्तदान शिविर का आयोजन।
50. इण्डियन रेड क्रॉस सोसायटी, गुजरात द्वारा राज्य की सभी ब्लड बैंकों को एमबीडीडी को समर्थन हेतु अपने द्वारा निवेदन।

BIKAJI
बीकाजी ग्रुप -बीकानेर

✦ *जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

प्रकाश, पवित्रता और परिष्कार का महापर्व है पर्युषण

श्यामनगर, जयपुर।

बहुश्रुत परिषद की सदस्या शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी 'लाडनूं' के सान्निध्य में जयपुर, भिक्षु साधना केंद्र, श्यामनगर में पर्युषण महापर्व आध्यात्मिक साधना-आराधना द्वारा मनाया गया। तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में आयोजित इस महापर्व में निरंतर नमस्कार महामंत्र के अखंड जप की अखंड ज्योति प्रज्वलित रही।

खाद्य संयम दिवस : खाद्य संयम दिवस के अवसर पर साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि आहार का आरोग्य और अध्यात्म से गहरा संबंध है। शब्द और संवाद दोनों जीभ पर निर्भर है। जीभ वश में तो स्वास्थ्य संतुलित और आपसी संबंध सुमधुर रह सकते हैं। सात्त्विक वृत्तियों का आधार भी सात्त्विक भोजन है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि पर्युषण ग्रंथि मोचन, आत्म-निरीक्षण और शोधन का पर्व है। इस आध्यात्मिक उत्सव का संदेश है—आत्मा को देखो, आत्मा की सुनो, आत्मा प्रतिष्ठित बने। साध्वी मधुलता जी ने पर्युषण आराधना और खाद्य संयम के विभिन्न बिंदुओं की ओर ध्यान आकर्षण किया। साध्वी मधुलेखा जी ने खाद्य संयम विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

स्वाध्याय दिवस : पर्युषण महापर्व के दूसरे दिन शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि स्वाध्याय उत्तम तप है। स्वाध्यायी व्यक्ति पर-चिंता और पर-प्रपंच से मुक्त रहता है। स्वाध्याय करने वाला दुश्चिंतन या सकारात्मक संकल्प-विकल्प से दूर रहता है। स्वाध्याय स्वयं को जानने-देखने और बदलने की प्रक्रिया है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि महावीर को जानने का अर्थ है आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया को जानना। साध्वी मधुलता जी ने कहा कि स्वाध्याय वह दर्पण है, जिससे हम स्वयं को देख सकते हैं। साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने स्वाध्याय को विस्तार के साथ बताया। महिला मंडल जयपुर, सी-स्कीम की युवती बहनों ने मधुर गीत प्रस्तुत किया।

सामायिक दिवस : सामायिक है आत्मा का अमृत। उस अलौकिक अमृत को प्राप्त करने पर्युषण का तीसरा दिवस सामायिक आराधना द्वारा मनाया गया। साध्वी मधुलता जी ने सामायिक साधना के विभिन्न चरणों का सुझाव देते हुए अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। लगभग ५५० लोगों ने निर्धारित समय में विधिवत् ८३० सामायिक की। साध्वी कनकश्री जी ने सामायिक साधना को कायाकल्प का प्रयोग और आत्मा का अमृत बताते हुए कहा कि सामायिक व्यक्तित्व के रूपांतरण की वैज्ञानिक विधि है। महिला मंडल की बहनों ने मंगल संगान किया।

वाणी संयम दिवस : पर्युषण के चौथे दिन वाणी संयम की विशेष प्रेरणा देते हुए साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि सामूहिक जीवन में मौन से भी अधिक मूल्य है विवेक का। संबंधों की मधुरता और कटुता भाषा प्रयोग पर ही निर्भर है। साध्वी मधुलेखा जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल संगान से किया। साध्वी समितिप्रभा जी ने वाणी संयम दिवस पर 'कैसे बोलें' के उपयोगी टिप्स बताए।

अणुव्रत चेतना दिवस : व्रत है सुरक्षा कवच विषय पर साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि अणुव्रत जीवन का दर्शन है, संयमित, अनुशासित जीवनशैली है। नया मानव, नया समाज, नया राष्ट्र, संयम और अनुशासन की नींव पर ही प्रतिष्ठित हो सकता है। साध्वी मधुलता जी ने मनोवैज्ञानिक तरीके से छोटे-छोटे नियमों की शक्ति और प्रभाव को समझाया। कन्या मंडल, जयपुर की कन्याओं ने मंगलाचरण किया। साध्वी मधुलेखा जी ने अणुव्रत के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

जप दिवस : शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने विभिन्न मंत्रों की आध्यात्मिक-वैज्ञानिक दृष्टि से चर्चा की। साध्वीश्री जी ने कहा कि महावीर का जन्म स्वतंत्रता एवं आत्मविजय का संदेश लेकर आया था। उदितोदित वर्धमान बचपन से ही साहसी, करुणाशील, विनम्र और माता-पिता के आज्ञाकारी थे। साध्वी मधुलता जी ने जप के विषय में विशेष जानकारी दी। साध्वी कनकश्री जी द्वारा रचित गीत सुधा दुगड़ ने प्रस्तुत किया।

ध्यान दिवस : साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि ध्यान के विधिवत् एवं नियमित अभ्यास से सत्य का साक्षात्कार एवं मैत्री का विस्तार होता है। साध्वी मधुलता जी ने मधुर संगान कर विशाल परिषद को ध्यान के अभ्यास की प्रेरणा दी। साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने ध्यान की चार भूमिकाओं का प्रतिपादन किया। तेयुप के युवा कार्यकर्ताओं ने मंगल संगान किया।

संवत्सरी पर्व : शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में संवत्सरी महापर्व मनाया गया। साध्वी मधुलेखा जी ने महामंत्र का जप और ध्यान का प्रयोग कराया। साध्वी वीणाकुमारी जी ने उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया। साध्वी कनकश्री जी ने संवत्सरी महापर्व को आत्ममंथन और आत्मा के सान्निध्य में रहने का पर्व बताया। साध्वी मधुलता जी ने महासती चंदनबाला के जीवन को प्रस्तुत किया।

साध्वी मधुलेखा जी ने श्रुतकेवली आचार्यों का इतिहास बताया। साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने निन्हव परंपरा को बताया। साध्वी कनकश्री जी ने जैन शासन की गौरवशाली ऐतिहासिक घटनाओं और तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा को बताया। निर्मला बरड़िया ने २६ की तपस्या का पच्चखाण किया। १७५ पौषध की आराधना भिक्षु साधना केंद्र एवं घरों में हुई। सभी कार्यक्रम एवं साधना-आराधना के उपक्रम विशेष आकर्षक, प्रेरक एवं संघ प्रभावक रहे।

मैत्री दिवस : भिक्षु साधना केंद्र के प्रज्ञा समवसरण में विशाल जनमेदिनी के मध्य साध्वीश्री जी द्वारा मंगलमय महामंत्र के पश्चात् मैत्री दिवस का कार्यक्रम परस्पर क्षमा के आदान-प्रदान के साथ संपन्न हुआ। सुशीला नखत ने उपस्थित जनमेदिनी के साथ श्रद्धेय आचार्यप्रवर, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी से सविधि क्षमायाचना की। जयपुर में विराजित सभी चारित्रात्माओं से तथा श्रावक-श्राविकाओं ने परस्पर खमतखामणा किया।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने मैत्री दिवस के महत्त्व को उजागर करते हुए उपशांत कषाय की साधना करने की प्रेरणा दी। आपश्री ने पूज्यप्रवर, मुख्य मुनि महावीर कुमार, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी से विनय भावित अंतःकरण से क्षमायाचना की। साध्वीवृंद व श्रावक-श्राविका समाज से खमतखामणा की। इस अवसर पर साध्वी मधुलता जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

भिक्षु साधना केंद्र समिति के अध्यक्ष नवरतन नखत ने कहा कि चातुर्मास और पर्युषणकालीन व्यवस्थाओं में कमी रही हो तो मैं सभा की तरफ से पूरे समाज से क्षमायाचना करता हूँ। महिला मंडल, जयपुर सी-स्कीम की अध्यक्षा नीरू पुगलिया, तेरापंथी सभा, जयपुर की ओर से हिम्मत डोसी ने अपनी संस्थाओं की ओर से खमतखामणा की। साध्वीश्री की आध्यात्मिक पुरुषार्थ और भारी परिश्रम के लिए श्रावक समुदाय ने कृतज्ञता के स्वरों में आंतरिक अहोभाव अभिव्यक्त किया। पूरे पर्युषण काल में प्रातःकालीन और रात्रिकालीन सभी कार्यक्रमों का संचालन साध्वी मधुलता जी ने किया।

बूस्टर डोज वेक्सिनेशन लगाया

विजयनगर।

तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्त्वावधान में वृहद महानगरपालिका के सहयोग से जरूरतमंद लोगों को कोविशील्ड बूस्टर डोज निःशुल्क लगाया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक मंत्री मंगल कोचर एवं सहमंत्री लाभेश कांसवा, ज्ञानू नाहटा की विशेष भूमिका रही। अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत, उपाध्यक्ष मनोहर बोहरा, विनोद पारख, संगठन मंत्री ललित सेठिया, बाबूलाल बोथरा, महेन्द्र, टेबा एवं कई सदस्य उपस्थित थे।

बारह व्रत कार्यशाला के आयोजन

श्रावक जीवन का सबसे बड़ा धन है बारह व्रत

जयपुर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन भिक्षु साधना केंद्र में शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी, अणुविभा जयपुर केंद्र में शासनश्री साध्वी धनश्री जी और तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी के सान्निध्य में किया गया तथा व्रत दीक्षा आयोजित की गई। जिसमें सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने बारह व्रत के नियमों का पालन करने का संकल्प लिया।

कार्यशाला में साध्वीश्री ने बारह व्रतों की विवेचना करते हुए बताया कि श्रावक को सम्यक्त्व का ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि सम्यक्त्व का ज्ञान होने पर ही व्यक्ति अपने स्वविवेक से छोटे-छोटे व्रतों का पालन करने की ओर अग्रसर होता है। व्यक्ति के द्वारा अपनी इच्छाओं को संयमित करना, श्रमण संस्कृति का मूलभूत अंग है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में संतुलन आए तो हमें छोटे-छोटे व्रतों का संकल्प करना चाहिए।

कार्यक्रम की संयोजना में मुख्य संयोजक गौतम बरड़िया, संयोजक के रूप में अणुविभा जयपुर केंद्र में सौरभ जैन, भिक्षु साधना केंद्र में चांदमल संकलेचा, तेरापंथ भवन में कुलदीप बैद सहित सभी कार्यकर्ताओं का श्रम उल्लेखनीय रहा।

कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्रीजी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन हुआ।

कार्यशाला का प्रारंभ साध्वी डॉ० योगक्षेप्रभा जी के उद्बोधन से हुआ। साध्वीश्रीजी ने श्रावक समाज को अपने जीवन व्रत का महत्त्व समझाया, जिससे कर्मों की निर्जरा और नए क्रमों को रोकने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण अंग बताया। साध्वी निर्वाणश्री जी ने भी प्रेरणा पाथेय से श्रावक समाज को बारहव्रती बनने के लिए प्रेरित किया और उनकी प्रेरणा से ७० से अधिक श्रावक बारहव्रती बने। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा भी मौजूद थे। तेयुप कांदीवली अध्यक्ष नवनीत कछारा, मालाड तेयुप अध्यक्ष मनोज लोढ़ा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष पारसमल दुग्गड भी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विनीत सिंघवी ने किया।

साहूकारपेट

जन्म से अनुयायी हो सकते हैं, पर व्रत स्वीकार किए बिना श्रावकपन प्राप्त नहीं किया जा सकता। श्रावकत्व व्रतचेतना से जुड़ी स्थिति है। यह यात्रा आगे बढ़ती-बढ़ती साधुत्व और आयोग तक पहुँचते-पहुँचते मोक्ष का वरण करती है। उपरोक्त विचार अभातेयुप के तत्त्वावधान एवं तेयुप चेन्नई की आयोजना में तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट, चेन्नई में बारह व्रत कार्यशाला में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञाजी ने कहे।

श्रावक-जीवन का सबसे बड़ा धन है-बारह व्रतों का खजाना। इस खजाने और सुरक्षा कवच की अच्छी तरह संभाल करते रहें। व्रतों को स्वीकार करके अपने जीवन को आनंदमय बनाएँ, प्रकाशमय बनाएँ।

तेयुप विजयगीत संगान से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेयुप उपाध्यक्ष संतोष सेठिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए बारह व्रतों को जीवन का अनमोल आभूषण बताया। साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा त्याग की चेतना जगाना, श्रावक-जीवन की महत्वपूर्ण साधना है। बारह व्रत विवेक जागरण की सशक्त और परिणामी साधना है। जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के साथ संयम की भावना भी बनी रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार मंत्री संदीप मुथा ने किया।

सरदारशहर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, सरदारशहर द्वारा बारह व्रत दीक्षा ग्रहण दिवस तेरापंथ में प्रातःकालीन व्याख्यान में साध्वी सुमतिप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया।

व्रत दीक्षा ग्रहण संभागी ५५ श्रावक-श्राविका रहे। इन सभी ने बारह व्रत १ साल, २ साल या आजीवन के लिए ग्रहण किए। साध्वीश्री जी द्वारा बारह व्रतों की जानकारी श्रावक समाज को २ दिवसीय कार्यशाला में विस्तार से दी गई।

बारडोली

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। लगभग २८ से ३३ व्यक्तियों ने पूर्ण अथवा आंशिक रूप से बारह व्रत श्रावक-श्राविका बनने हेतु अपनी तत्परता जताई एवं विभिन्न संकल्प स्वीकार किए।

अभातेयुप के कार्यसमिति सदस्य एवं परिषद के मंत्री रौनक सरणोत, तेयुप अध्यक्ष साहिल बाफना ने संपूर्ण कार्यशाला के अंतर्गत अपनी क्षमता, गतिशीलता से इसे सफल बनाया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राजेंद्र बाफना, मंत्री अनिल बाफना, अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की एवं समस्त कार्यसमिति सदस्य एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ *चिंतन से आदमी दुःखी बन सकता है और चिंतन से वह सुखी हो सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

विकास महोत्सव के आयोजन

शाहदरा

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। सुमन सिंघी द्वारा समुच्चारित मंगल गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आपने तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के नए-नए आयाम दिए। जिनके द्वारा इस संघ को आकाशीय ऊँचाई मिली और सागर जैसी गहराई मिली।

शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कहा कि आचार्य तुलसी सफलता के श्लाका पुरुष थे। उन पर तकदीर मेहरबान थी, हौसले बुलंद थे, पुरुषार्थ की लौ कभी मंद नहीं होती थी। ८३ वर्ष की उम्र में भी युवकों जैसी स्फूर्ति थी।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा कि आप शक्तिसंपन्न आचार्य थे। आपमें अपरिमित आत्मबल, मनोबल व धैर्यबल था। आशा के अजस्त्र स्रोत थे। निराशा की बात उनको बिलकुल नहीं सुहाती थी।

साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि वे मैत्री के महासागर थे। उनके नयनों से शांति के झरने झरते थे।

शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, मंत्री आनंद बुच्चा, निवर्तमान अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, पूर्व अध्यक्ष भानुप्रकाश बरड़िया, तेममं की मंत्री यश बोथरा गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, गुलाब भंसाली, ओसवाल समाज अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिंतनप्रभा जी ने किया।

जाटावास

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी विकास पुरुष थे, शलाका पुरुष थे, विकास के पुरोधा थे, विकास के प्रतीक थे। विविध क्षेत्रों में अपने विकास के नए क्षितिज खोले नए-नए आयाम उद्घाटित किए। चिंतन का पहला स्फुलिंग आपके मस्तिष्क में उत्पन्न होता साधना, शिक्षा, कला, यात्रा, सेवा, जन-संपर्क, व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण अवदान दिए। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान आज के युग की विशिष्ट देन है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप वीर्य में अधिक से अधिक विकास पथ पर अग्रसर होते रहें। आचार्य तुलसी के सपनों को साकार करते रहें। हर क्षेत्र में आगे बढ़ते रहें।

साध्वी कंचनरेखा जी ने अपने भावपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। साध्वी सुमंगलाश्री जी, साध्वी सुलभयशा जी, साध्वी संबोधयशा जी, साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष पन्नालाल कागोत, महिला मंडल कोषाध्यक्ष राजश्री समदड़िया, तेयुप से तरुण समदड़िया आदि वक्ताओं ने आचार्य तुलसी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए।

मंगलाचरण तेयुप के सदस्यों ने किया। तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया। सुनीता चोरड़िया ने ११ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

आमेट

साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। साध्वी रुचिप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ में पट्टोत्सव, चरमोत्सव एवं मर्यादा महोत्सव की एक सार्थक शृंखला में एक नई कड़ी जोड़ी 'विकास महोत्सव' की।

साध्वीश्री जी ने बताया कि संघ के सर्वोन्मुखी विकास के लिए आचार्य तुलसी के उर्वर मस्तिष्क से विभिन्न प्रयोगों का आविष्कार होता रहता था। उन्होंने समय की नब्ज को पहचाना। युगानुकूल नए-नए कार्यक्रम दिए, प्रगति की नई-नई दिशाएँ दीं। वे नित नए स्वप्न देखते थे।

विकास महोत्सव के कार्यक्रम में महासभा के कार्यकारिणी सदस्य प्रवीण ओस्तवाल, तेयुप के अध्यक्ष पवन कच्छारा, महिला मंडल की अध्यक्षा मीना गेलड़ा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष दलीचंद कच्छारा एवं स्थानीय एवं बाहर से पधारे हुए भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री जी ने महामंत्रोच्चार एवं तुलसी अष्टकम् से कार्यक्रम शुभारंभ किया। विकास महोत्सव के महत्त्व को दर्शाते हुए साध्वी पीयूषप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम् आचार्य कालूगणी ने मुनि तुलसी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। भाद्रव शुक्ला नवमी को आचार्य तुलसी का पदाभिषेक हुआ। २२ वर्ष की लघु आयु में आचार्य पद पाया और ६० वर्ष की अनुशासना में नए-नए कीर्तिमान रचते गए।

आचार्य महाप्रज्ञ की प्रज्ञा ने आकार लिया और आज का दिन जहाँ पहले पट्टोत्सव के रूप में मनाया जाता था, वहीं अब विकास महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। विकास पुरुष आचार्य तुलसी का इस गण पर, मानव जाति पर इतने उपकार हैं, जिससे वह कभी उऋण नहीं हो पाएगा। ऐसे विकास के पुरोधा आचार्यश्री तुलसी को शत-शत नमन।

साध्वी भावनाश्री जी ने आचार्य तुलसी के शिक्षण, प्रशिक्षण शैली पर प्रकाश डाला। साध्वी सुधाकुमारी जी ने गीत का संगान किया। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, पूर्व अध्यक्ष पूनमचंद सुराणा, प्रियंका भूतोड़िया, रिद्धिमा सुराणा, पन्नालाल बैद एवं कानपुर महिला मंडल ने गीत और वक्तव्य द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया।

इचलकरंजी

तेरापंथ भवन, तुलसी सभागार में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव मनाया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि जब आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा ग्रहण की उसके साथ ही विकास की यात्रा प्रारंभ हो गई और यह यात्रा चतुर्विध धर्मसंघ के साथ वर्धमान होती रही। जिस धर्मसंघ में अनुशासन, विनय, समर्पण होता है वह सदैव विकास के शिखरों पर चढ़ता जाता है।

आचार्यश्री तुलसी ने संघ समाज को विकास के नए-नए अवदान प्रदान किए।

कार्यक्रम में साध्वीवृंद द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी विज्ञप्रभा जी ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त घोषों पर शब्दचित्र की प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष महेंद्र गीड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष जयश्री जोगड़ ने वक्तृत्व द्वारा अभिवंदना की। महिला मंडल की बहनों, तेयुप द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया। कार्यक्रम का समापन संघगान के साथ हुआ।

अमराईवाड़ी-ओढ़व

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में अमराईवाड़ी ओढ़व के सिंघवी भवन में आचार्य तुलसी का २९वाँ विकास महोत्सव मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वीश्री जी ने आचार्य तुलसी के अनेक अवदानों की चर्चा करते हुए आचार्य तुलसी को तेजस्विता के पुरोधा पुरुष के रूप में बताया। आचार्य तुलसी ने जैनधर्म के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत किया।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने आचार्य तुलसी को दुर्लभ व्यक्तित्व के रूप में बताया। उनका जीवन पुरुषार्थ की गौरव गाथा था। साध्वी तरुणप्रभा जी ने आचार्य तुलसी को पुरुषार्थ के प्रतीक, करुणा के सागर, अप्रमत्तता के सागर के रूप में बताया। साध्वी नंदिताश्री जी ने शासनश्री साध्वी सरस्वती जी द्वारा रचित गीत प्रस्तुत किया। साध्वी परमार्थप्रभा जी ने कविता के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

इस कार्यक्रम में तेरापंथ सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, महिला मंडल अध्यक्षा संगीता सिंघवी, तेयुप कोषाध्यक्ष प्रेम पगारिया, महिला मंडल द्वारा गीतिका, तेरापंथ सभा के पूर्वाध्यक्ष दिनेश चंडालिया ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री गणपत हिरण ने किया।

गांधीनगर, बैंगलोर

कुछ करिश्माई व्यक्तित्व इतिहास को सिरे से बदल देते हैं। ऐसे ही एक व्यक्तित्व हुआ, जिसने अपने कर्तृत्व के शंखनाद से नए विकास के युग का आरंभ किया। वह व्यक्तित्व हुआ आचार्यश्री तुलसी। गुरुदेव तुलसी जिन्होंने लघुवय में संयम स्वीकार कर अपने विनय समर्पण द्वारा बाइस वर्ष की उम्र में ही आचार्य पद को संभाल लिया। वह मानवता के मसीहा थे। उनकी हर एक कला विलक्षण थी।

आज गुरुदेव तुलसी का पट्टोत्सव है, जिसे हम विकास महोत्सव के रूप में मना रहे हैं । हम उनके दिखाए हुए विकास के राजमार्ग पर चलते हुए जीवन को विकसित एवं पल्लवित करें। सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने मानवता का विकास किया है, वह समाज सुधारक थे। जिन्होंने अपने अवदानों द्वारा एक नया प्रकाश दिखाया। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। बहादुर सेठिया ने गीतिका प्रस्तुत की। वीणा बैद ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में महासभा कर्नाटक दक्षिण आंचलिक प्रभारी प्रकाशचंद लोढ़ा, तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा एवं श्रावक समाज उपस्थित थे।

साहूकारपेट

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने 'शुभ भविष्य है सामने' के रूप में तेरापंथ संघ को शाश्वत आशीर्वाद दिया। उनकी वचनसिद्धि विलक्षण थी। साध्वीश्री जी ने वचनसिद्धि के अनेक प्रेरक संस्मरण सुनाए।

साध्वीश्री द्वारा महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड, तेममं की वरिष्ठ उपाध्यक्षा अलका खटेड़, तेरापंथ सभा ट्रस्ट बोर्ड अध्यक्ष विमल चिप्पड़, मैसूर से समागत तेयुप के पूर्व अध्यक्ष विक्रम पितलिया, तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष विशाल सुराणा, जयपुर से समागत माणक देवी छाजेड़ ने अपनी श्रद्धा भावना व्यक्त की। रिंकु ओस्तवाल ने मधुर स्वरों से गुरु तुलसी की अभ्यर्थना की। मैसूर से समागत ज्ञानशाला के बच्चों वर्षित, हनी और ध्रुवी पितलिया ने बाल सुलभ भावनाएँ व्यक्त कीं।

साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि गुरु तुलसी सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने हर दिशा में संघ का विकास करवाया। उनके आयामों की गूँज देश-विदेशों में आज भी गूँज रही है। उनके विचार और कार्यशैली ने तेरापंथ को विकास के शिखरों पर आरोहण करवाया। साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने मंच संचालन किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वी परमयशा जी ने कहा कि बीसवीं सदी में राजस्थान की पावन धरा पर एक प्रकाशपुंज बनकर आए आचार्य तुलसी। जिनका जीवन आश्चर्यों की वर्णमाला था। आचार्य तुलसी शांत व्यक्ति थे। अध्यात्म के शिखर पुरुष का हर पहलू दिव्य और भव्य था।

कार्यक्रम में साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी व साध्वी कुमुदप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के कीर्तिमानों की सामूहिक प्रस्तुति दी और उसके पश्चात सामूहिक गीतिका का संगान किया।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी ने कविता एवं गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो० धर्मचंद जैन ने कहा कि आचार्य तुलसी ने बहुत अवदान दिए, उसमें प्रमुख था—साध्वी-साध्वियों की शिक्षा-दीक्षा विस्तार। गुरुदेव तुलसी ने इस संघ को तीन अमूल्य रत्न दिए—महाप्रज्ञ, साध्वीप्रमुखा और महाश्रमण। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि कार्यक्रम में तेममं और नन्हे कलाकार सिद्धार्थ दुगड़ ने गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा संस्था मंत्री योगेश चंडालिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

भव्य नाट्य प्रस्तुति

रायपुर।

समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में उनके निर्देशन व मार्गदर्शन में निर्मित भव्य नाट्य प्रस्तुति 'स्वर्ग में एक ही सीट खाली है' ज्ञानवर्धक, रोचक, प्रेरणादायक धर्ममार्ग की ओर ले जाने वाली नाट्य प्रस्तुति तेरापंथ अमोलक भवन में की गई।

तेरापंथ कन्या मंडल, रायपुर द्वारा आचार्यश्री भिक्षु के दृष्टांग पर आधारित नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम के अंत में तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा कन्हैयालाल पवन कुमार फलोदिया के सहयोग से समणीवृंद के सान्निध्य में आयोजित स्वामी भीखणजी प्रश्नपत्र प्रतियोगिता के प्रतिभागियों, सामूहिक एकासन में एकासन करने वाले ज्ञानार्थियों व नाट्य प्रस्तुति में सहभागी कलाकारों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव के आयोजन

जसोल

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम स्वतंत्र भारत के ७५वें स्वतंत्रता दिवस का 'अमृत महोत्सव' शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। तेरापंथ सभा, तेयुप, तेमम, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हुआ।

सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा, तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली, मंत्री अमित सुराणा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष पारसमल गोलछा के मुख्य आतिथ्य में झंडारोहण किया गाय। सामूहिक राष्ट्रगान का संगान किया गया।

साध्वी सत्यप्रभा जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। इस अवसर पर समाज के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

एम०के०बी० नगर, चेन्नई

आजादी का अमृत महोत्सव उपनगर एमकेबी नगर में गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल परिसर में अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की प्रधानाध्यापिका जे० निर्मला रानी के स्वागत स्वर से हुआ। प्रायोजक चंद्रेश चिप्पड़ द्वारा ध्वजारोहण हुआ। तिरंगे के सम्मान में अणुव्रत समिति, चेन्नई के सभी सदस्यों एवं विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा तमिल ताई वालूतू का संगान हुआ।

अध्यक्ष ललित आंचलिया ने अणुव्रत समिति का परिचय दिया। मंत्री अरिहंत बोथरा एवं सहमंत्री स्वरूपचंद दांती द्वारा प्रधानाध्यापिका को अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड प्रदान किए गए। डिंपल चिप्पड़ एवं चेतन चिप्पड़ द्वारा प्रधानाध्यापिका को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में अणुव्रत विश्व भारती के प्रकल्प असली आजादी अपनाओ के तर्ज पर वाद-विवाद और स्वर्ण भारत की झलक पर भाषण तथा पर्यावरण संरक्षण पर एक नाटक का आयोजन किया गया। ललित आंचलिया ने विद्यालय परिवार का समिति की ओर से आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के संगान से हुआ। कार्यक्रम की सफलता में अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष पंकज चोपड़ा, समिति सदस्य मनोज डूंगरवाल, महेंद्र कात्रेला, प्रकाश कोठारी की सहभागिता रही।

वाशी

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में आजादी का अमृत महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी पंकजश्री जी ने मंगल पाठ के उच्चारण से किया। ध्वजारोहण के लिए अणुव्रत सभागार के ट्रस्टी लादूलाल श्रीमाल एवं फायर ब्रिगेड के चीफ ऑफिसर संदेश एवं उनकी टीम, तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, महिला मंडल संयोजिका इंदु बडाला ने राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रध्वज को सलामी दी।

साध्वी ललिताश्री जी ने कविता की प्रस्तुति दी। साध्वी शारदाप्रभा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि ब्रिटिश सरकार की जंजीरों से देश आजाद हो गया लेकिन भ्रष्टाचार, अप्रमाणिकता, अनैतिकता की बेड़ियों से मुक्त नहीं हो पा रहा है, बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी ने देश के चरित्ररूपी ग्राफ को ऊपर उठाने के लिए अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की। अपेक्षा है अणुव्रत को अपने जीवन में उतारने की।

विले पार्ले

साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में आजादी का अमृत महोत्सव विले पार्ले के गोयल निवास में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नवकार मंत्र से हुई। सुर-संगम की गायिका रेणु कोठारी द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी मलयविभा जी, साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चैतस्वीप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी राकेश कुमारी जी ने आजादी के महत्त्व एवं इतिहास के बारे में बताया। विले पार्ले, तेयुप अध्यक्ष अरविंद कोठारी एवं महिला मंडल संयोजिका रेखा कोठारी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में तथा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई और श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी माधावरम् ट्रस्ट के आयोजकत्व में कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला (आंध्र प्रदेश, केरल, पुदुचेरी व तमिलनाडु स्तरीय) का आयोजन मुनि सुधाकर कुमार जी और मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल, माधावरम् के प्रांगण में आयोजित हुई।

कार्यशाला का प्रथम सत्र 'प्रेरणा सत्र' के रूप में मुनि सुधाकर कुमार जी के महामंत्रोच्चार से आरंभ हुआ। रेखा मरलेचा ने मंगलाचरण किया। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। चेन्नई सभा अध्यक्ष उगमराज सांड ने समग्र चेन्नई समाज की ओर से स्वागत किया। माधावरम् ट्रस्ट की ओर से घीसूलाल बोहरा ने परिषद का स्वागत किया। आचार्य महाश्रमण जैन तेरापंथ विद्यालय के चेयरमैन प्यारेलाल पितलिया ने विद्यालय की ओर से सभी आगंतुकों का स्वागत किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी सुरेश गोयल, कार्यशाला संयोजक ज्ञानचंद आंचलिया ने अभिव्यक्ति दी।

मुनि नरेश कुमार जी ने संबोधन प्रदान किया। तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ समाज के लिए ब्रह्म वाक्य है—'एक गुरु और एक विधान', हमें जहाँ तक हो सके चुनावों से बचना चाहिए। मैं प्रेरणा देता हूँ महासभा ऐसा कोई प्रावधान करे कि समाज से यह चुनाव की समस्या खत्म हो जाए।

संयोजन ज्ञानचंद आंचलिया ने किया। आभार ज्ञापन महासभा कार्यसमिति सदस्य विमल चिप्पड़ ने किया।

द्वितीय सत्र—'प्रशिक्षण सत्र; के रूप में आरंभ हुआ। इस सत्र का संचालन महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री विनोद बैद ने किया।

प्रशिक्षण के क्रम में विनोद बैद ने कहा कि सभा अध्यक्ष के लिए दो पुस्तकों का अध्ययन अपेक्षित है—एक सभा संचालन मार्गनिर्देशिका और दूसरी श्रावक संदेशिका।

महासभा के उपाध्यक्ष विजय चोपड़ा ने सभा के वैधानिक पंजीकरण की आवश्यकता पर विस्तार से बताया। मध्याह्न के सत्र में महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत ने विशेष जानकारी दी। कार्यशाला के सत्र का संचालन महासभा महामंत्री विनोद बैद ने किया।

अंतिम सत्र में प्रतिभागियों के जिज्ञासा-समाधान का कार्यक्रम चला। जिसमें केंद्रीय पदाधिकारियों ने सभी की जिज्ञासाओं का समाधान दिया। मुख्य न्यासी सुरेश गोयल ने भी संघ की रीति-नीति से अवगत करवाया। धन्यवाद ज्ञापन महासभा के उत्तर तमिलनाडु आंचलिक प्रभारी देवराज आच्छा ने दिया।

✦ *परिवर्तन के आकर्षण में इतना नहीं बहना चाहिए कि व्यक्ति मूल्यपरक संस्कृति से दूर हो जाए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

श्रीमज्जयाचार्य का १४२वाँ निर्वाण दिवस एवं तप अभिनंदन समारोह

राजलदेसर।

तेरापंथ धर्मसंघ में मर्यादा और अनुशासन की परंपरा को सुदृढ़ करने वाले चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य का १४२वाँ निर्वाण दिवस तेरापंथ भवन में साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जयाचार्य एक अध्यात्मवेत्ता, तत्त्ववेत्ता आचार्य थे। जयाचार्य अध्यात्म के मणिदीप थे। ऊर्जा के अक्षय कोष थे।

इस अवसर पर साध्वीवृंद एवं महिला मंडल ने गीतिका प्रस्तुत की। कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से शुरू हुए तप अभिनंदन समारोह में अपने भावों को प्रकट करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि भव परंपरा को तपस्या के द्वारा कम किया जा सकता है। तपस्या कर्मों को हल्का करने के लिए की जाती है। तपस्या वह वज्र है जो कर्मों को चकनाचूर कर देता है। तपस्या से अनेकों व्याधियों का निवारण होता है।

इस अवसर पर लक्ष्मी डागा द्वारा सात दिवसीय तप का अभिनंदन भी किया गया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। साध्वी प्रणवप्रभाजी, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष, तेयुप अध्यक्ष, तेमम सहित सविता बच्छावत, रीना बैद, आरती बैद, खुशी बैद आदि ने गीत, वक्तव्य के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभाजी ने किया।

तुलसी सभागार का लोकार्पण

उदयपुर।

तुलसी निकेतन समिति परिसर में आयोजित समारोह में वातानुकूलित नवीन सभागार का लोकार्पण तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने किया। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री विनोद बैद उपस्थित थे।

तुलसी निकेतन के महामंत्री अशोक डोसी के परिवार के आर्थिक सौजन्य से निर्मित इस सभागार में धर्मसंघ के साधु-साध्वियों का प्रवास हो सकेगा। प्रारंभ में समिति के अध्यक्ष सुरेश दक ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यकारी अध्यक्ष अरुण कोठारी ने समिति की विकास यात्रा का ब्यौरा प्रस्तुत किया। संस्थापक सदस्य गणेश डागलिया ने इसकी स्थापना के संघर्षों से अवगत कराया।

इस अवसर पर महासभा आंचलिक प्रभारी धीरेंद्र मेहता, कार्यसमिति सदस्य महेंद्र सिंघवी, चैंबर के पूर्व अध्यक्ष मांगीलाल लुणावत, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष आलोक पगारिया सहित तेरापंथ समाज के पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन आलोक पगारिया ने व आभार ज्ञापन मंत्री अशोक डोसी ने किया।

साध्वी धर्मयशा जी का देवलोकगमन

जयपुर।

साध्वी धर्मयशाजी का जन्म वि० सं० २०१८ कार्तिक कृष्णा-२ को गोलछा परिवार में हुआ। साध्वीश्री जी के पिता का नाम श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० हड़मानमल गोलछा और माता का नाम श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व० सज्जन देवी गोलछा था।

साध्वी नजरकंवर जी और साध्वी गुप्तिप्रभा जी की प्रेरणा से आपके भीतर वैराग्य के भाव आए। आपकी दीक्षा वि०सं० २०४० माघ शुक्ला त्रयोदशी को गुरुदेव श्री तुलसी के करकमलों से बीदासर की भूमि में हुई।

आपको आगम बत्तीसी सहित ५२ बोल, नाममाल के अध्याय, भीखण को सुमिरण, तत्त्वचर्चा आदि कई थोकडे, सैकड़ों ढाले कंठस्थ थी। साध्वीश्री जी गीत, कविता, मुक्तक आदि की सुंदर रचनाकार थीं। आप मर्यादा परंपरा व्यवस्था के भी जानकार थी। ध्यान, जप, चौविहार त्याग, और साधना, स्वाध्याय आपके दिनचर्या में शामिल था। आपके प्रवचन, गीत और बोलने की शैली से सभी को बहुत प्रेरणा मिलती थी। आप सिलाई, रंगाई, मुहपत्ति,राजोहरण निर्माण में दक्ष थीं। आपने जैन विश्व भारती संस्थान से बी०ए० और एम०ए० किया था।

साध्वी धर्मयशा जी के परिवार से साध्वी परमयशा जी व मुनि धन्य कुमार जी दीक्षित हैं।

२० अगस्त, २०२२ को बीदासर में गिर जाने की वजह से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था। २३ अगस्त को गुरुदेव की अनुमति से चिकित्सा की दृष्टि से आपको जयपुर ले जाया गया। गुरुदेव ने साध्वी हेमरेखाजी आदि तीन साध्वियों को आपकी सेवा के लिए नियोजित किया। तीनों साध्वियों ने आपकी बहुत अच्छी सेवा की। दो दिन के संलेखना के साथ १० सितंबर, २०२२ को प्रातः ५ बजकर २५ मिनिट पर साध्वी धर्मयशा जी का देवलोकगमन हो गया। आपका दीक्षा पर्याय २६ वर्ष ७ माह के लगभग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ *हमारी दुनिया में अज्ञान कष्ट है, अभिशाप है तथा ज्ञान वरदान है। अज्ञानी अपने हित और अहित का विवेक नहीं कर पाता।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेममं का ४७वाँ राष्ट्रीय महिला अधिवेशन 'परचम केसरिया शक्ति का'

छापर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में ४७वाँ राष्ट्रीय महिला अधिवेशन 'परचम केसरिया शक्ति का' त्रिदिवसीय अधिवेशन छापर, लाडनूं में आयोजित हुआ। अधिवेशन का मंगल आगाज छापर में परमपूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में आर्षवाणी के साथ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि गुरुदेव ऐसी ऊर्जा प्रदान करवाएँ कि अधिवेशन में समागत प्रत्येक महिला संघ के प्रति समर्पित हो। आचार्यप्रवर ने अमृत पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि संस्था का आध्यात्मिक व बौद्धिक विकास होता रहे। संस्था का उन्नयन व महिलाओं का निरंतर विकास होता रहे।

लाडनूं में जैन विश्व भारती प्रांगण में मध्याह्न लगभग १ बजे लाडनूं महिला मंडल के मंगल संगान के साथ अधिवेशन का प्रारंभ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने क्षेत्रों से समागत शाखा मंडलों का स्वागत करते हुए उनके द्वारा किए कार्यों की सराहना की एवं सभी शाखाओं का अभिनंदन किया।

समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम के अंतर्गत शाखा मंडलों ने विभिन्न योजनाओं पर अपनी सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया।

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र 'परचम जागृति का' के अंतर्गत समसामयिक विषयों पर चर्चा की गई। मुख्य विषयों पर अधोलिखित सदस्यों ने अपनी प्रस्तुति दी।

Late Marriage – रा०का०स० सुनीता जैन

Disregard to Elders – रा०का०स० रमण पटावरी

Why Addiction is a Fascination – रा०का०स० नीतू पटावरी

Pre-Wedding Shoot – रा०का०स० सुमन नाहटा

उपरोक्त विषयों पर चर्चा सहित समाधान प्रस्तुत किए गए। रा०का०स० ज्योति जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

'परचम प्रगति का' : रात्रिकालीन सत्र का शुभारंभ मुंबई महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। महामंत्री मधु देरासरिया ने प्रगति का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हुए शाखा मंडलों के कर्तृत्व की सराहना की एवं वर्ष भर शाखाओं द्वारा कृत कार्य का ब्योरा प्रस्तुत किया। पुरानी ढालों के पुनरावर्तन की एक झलक प्रस्तुत करते हुए बहनों ने ढाल का संगान किया। रा०का०स० तरुणा बोहरा एवं डॉ० वंदना बरड़िया ने रोचक ढंग से अभातेममं की भावी योजनाएँ जैसे–अंकुरम्, उम्मीद (निर्माण प्रोजेक्ट), सामर्थ्य (Part Two), कला अभ्युदय योजना, तालमेल, Lifestyle without Cruelty, पुरानी ढालों का पुनरावर्तन, काव्यशाला आदि योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की। C^2 Show - Correct Connexion नामक आध्यात्मिक गीतों पर संगीतमय खेल खिलाया गया। सत्र का संचालन सहमंत्री निधि सेखानी ने किया।

अधिवेशन का द्वितीय दिवस

द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र 'परचम गुरु भक्ति का' : इस सत्र का आयोजन परमपूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने शाखा मंडलों के पुरुषार्थ को अभिव्यक्त करते हुए पूज्यप्रवर से उनमें ऊर्जा संप्रेषित करने का अनुग्रह किया। महामंत्री मधु देरासरिया ने गुरु अनुकंपा की अनुमोदना करते हुए श्रीचरणों में प्रतिवेदन निवेदित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री व चीफ ट्रस्टी ने प्रतिवेदन की प्रति गुरुचरणों में समर्पित की।

अभातेममं द्वारा डॉ० माणक बाई कोठारी को 'श्राविका गौरव' अलंकरण से सम्मानित किया गया। अभिनंदन पत्र का वाचन रा०का०स० सुमन नाहटा ने किया। तेरापंथ समाज की प्रतिभावान महिला व कन्या को प्रदत्त 'सीतादेवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार' से डॉ० मोनिका जैन एवं ऐश्वर्या नाहटा को सम्मानित किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन रा०का०स० सुनीता जैन व वीणा बैद ने किया।

'श्राविका गौरव' डॉ० माणकबाई कोठारी व 'प्रतिभा पुरस्कार' से सम्मानित डॉ० मोनिका जैन एवं ऐश्वर्या नाहटा ने गुरुचरणों में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि अभातेममं तेरापंथ धर्मसंघ का सशक्त संगठन है। संघ में सेवा के लिए सदैव मंडल तत्पर रहा है। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि अभातेममं एक धार्मिक व सामाजिक संगठन है। एक अच्छा संगठन आभाषित हो रहा है। बहनें उपासिका, प्रशिक्षिका, तत्त्वज्ञान व तेरापंथ दर्शन के क्षेत्र में बहुत विकास कर रही है एवं संघ को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही है। संस्था खूब धार्मिक, ज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में विकास करती रहे। सत्र का संचालन महामंत्री मधु देरासरिया ने किया।

राष्ट्रीय अधिवेशन का पंचम सत्र 'परचम उपासना का' छापर महिला मंडल के मंगल संगान के साथ प्रारंभ हुआ। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि हर व्यक्ति के भीतर शक्ति का अनंत स्रोत है। आवश्यकता है उसे जागृत करने की। सोई शक्ति को जगाने का माध्यम है–स्वाध्याय, ध्यान, संयम और सुमंगल साधना का अभ्यास।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि हमारी जीवनशैली संस्कार प्रधान बननी चाहिए। सादगी प्रधान जीवनशैली हमारे आभामंडल को तेजस्वी बनाने में सहायक होती है। प्रत्येक महिला प्रफुल्लता, प्रसन्नता के साथ आगे बढ़कर संस्था को विकास की ऊँचाइयों तक ले जाएँ, यही मंगलकामना। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने बहनों की जिज्ञासाओं को अपनी अमृत वाणी में समाहित किया। कृतज्ञता के भाव समर्पित किए वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरिता डागा ने व कार्यक्रम का संचालन किया रा०का०स० अदिति सेखानी ने।

अभातेममं का ४७वाँ राष्ट्रीय महिला अधिवेशन का साधारण सदन

साधारण सदन का शुभारंभ गुवाहाटी महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने समागत सभी बहनों का स्वागत किया। महामंत्री ने गत मिनिट्स का वाचन किया, जिसे सदन ने सहर्ष पारित किया। कोषाध्यक्ष रंजू लुणिया ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया, जिसे सदन द्वारा पारित किया गया। महामंत्री मधु देरासरिया ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने 'ॐ अर्हम्' की ध्वनि से पारित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा दो नए ट्रस्टी बिमला दुगड़ एवं ज्योति जैन के नामों की घोषणा की गई। चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी व ट्रस्टी कनक बरमेचा ने संशोधित संविधान को सदन के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने पारित किया। आभार ज्ञापन नवनिर्वाचित ट्रस्टी बिमल दुगड़ ने किया एवं सत्र का संचालन उपाध्यक्ष विजयलक्ष्मी भूरा ने किया।

अधिवेशन का तृतीय दिवस

अधिवेशन के तृतीय दिवस को प्रातःकालीन सत्र 'परचम ऊर्जा का' जैन विश्व भारती परिसर स्थित आचार्य तुलसी स्मारक पर आयोजित हुआ। अभातेममं की संपूर्ण टीम एवं अधिवेशन में समागत समस्त बहनों ने स्मारक में सामायिक एवं जाप किया। लगभग सवा घंटे के इस उपक्रम में पैंसठिया छंद, श्रावक संबोध, जप व गीतिका का समवेत स्वरों में संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन रा०का०स० मंजु भूतोड़िया ने किया।

अंतिम सत्र 'परचम सफलता का' का शुभारंभ लूणकरणसर महिला मंडल की सुमधुर गीतिका संगान के साथ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने Milestones to Success के अंतर्गत शाखा मंडलों को सफलता के सूत्र बताए। शाखा मंडलों के कर्तृत्व का मूल्यांकन करते हुए प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। पारितोषिक वितरण सत्र का संचालन रा०का०स० जयश्री जोगड़ व रचना हिरण ने किया। महामंत्री मधु देरासरिया ने सभी के कर्तृत्वों की व्याख्या की व संपूर्ण सत्र का संचालन रा०का०स० ललिता धारीवाल ने किया।

टोहाना

महिला मंडल द्वारा प्रतिक्रम कार्यशाला के आयोजन

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा जी के सान्निध्य में प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेममं की मंत्री प्रमिला जैन तथा संगठन मंत्री अंजु जैन ने जागृति गीत के संगान से किया। तेममं अध्यक्षा उषा जैन ने प्रतिक्रमण कार्यशाला की संक्षिप्त जानकारी दी।

साध्वी कल्पमाला जी ने कहा कि प्रतिक्रमण का अर्थ है आत्मा में वापस लौटना। उन्होंने कहा कि पर्युषण के अवसर पर प्रतिक्रमण का बहुत बड़ा महत्त्व है तथा यह जाने-अनजाने किए गए पापों का आत्मा द्वारा किया गया प्रायश्चित है।

साध्वी संकल्पश्री जी ने कहा कि जिस प्रकार स्नान से शरीर स्वच्छ व स्वस्थ होता है उसी प्रकार प्रतिक्रमण से आत्मा स्वच्छ व स्वस्थ बनकर मोक्षगामी होती है। प्रतिक्रमण आत्मा का स्नान या आत्मनिरीक्षण है।

साध्वी बसंतप्रभा जी ने कहा कि प्रतिक्रमण आत्मा को निर्मल बनाने का साबुन है। प्रतिक्रमण करने से कर्मों की निर्जरा होती है। महिला मंडल द्वारा साध्वीवृंद का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर प्रतिक्रमण पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम स्थान तेममं अध्यक्षा उषा जैन तथा अनीता जैन ने प्राप्त किया।

राउरकेला

उपासक के उपस्थिति में महिला मंडल की कार्यशाला संपादित हुई। शुरुआत उपासकद्वय ने नमस्कार महामंत्र से की। इसके बाद प्रेरणा गीत का संगान महिला मंडल की बहनों ने किया। मंडल की अध्यक्षा सरोज गोलछा ने प्रतिक्रमण कार्यशाला के बारे में बताया। तत्पश्चात संपत भंसाली ने प्रतिक्रमण के बारे में विस्तार से बताया।

प्रवक्ता उपासक पवन ने बताया कि प्रतिक्रमण क्या है और हमें क्यों करना चाहिए? सहयोगी उपासक आदित्य ने प्रतिक्रमण कब करना चाहिए, क्यों करना चाहिए और कैसे करना चाहिए? के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन संगीता दुगड़ ने किया।

✦ *ज्ञान का महत्त्व है। उसके साथ चरित्र, आचार का भी महत्त्व है। ज्ञान को जीवन में क्रियान्वित करने से पूरी निष्पत्ति की बात हो सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

अभिनव सामायिक के विविध आयोजन

आत्म उत्थान का अनुपम अनुष्ठान है-सामायिक

सरदारपुरा

शासनश्री साध्वी, सत्यवती जी के सान्निध्य में अमरनगर स्थित तेरापंथ भवन में व साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में तातेड गेस्ट हाऊस सरदारपुरा में तेयुप द्वारा सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया।

परिषद अध्यक्ष महावीर चौधरी ने वक्तव्य दिया। इस अवसर पर तेरापंथ भवन अमरनगर में सामायिक विषय पर साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और आत्मा को निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने सामायिक में दिशा, उपकरण आदि की जानकारी दी। संचालन सभी मंत्री महावीर चोपड़ा ने किया।

मेघराज तातेड़ भवन में साध्वी जिनबाला जी ने कहा आज सामायिक दिवस समता की साधना को उद्धत करने वाला है। सामायिक में सावद्य योग का प्रत्याख्यान किया जाता है सावद्य योग का अर्थ है पापकारी प्रवृत्ति। सामायिक के द्वारा कर्म आगमन के मार्ग को रोक दिया जाता है, और सामायिक में जो स्वाध्याय, जप किया जाता है उससे कर्मों की निर्जरा होती है। साध्वी करुणाप्रभा जी ने भगवान महावीर की भव परंपरा को आगे बढ़ाते हुए विश्वभूति के भव का वर्णन किया। साध्वी महकप्रभा जी ने साामयिक गीत का संगान किया। संचालन मानवी सालेचा ने किया।

तेयुप मंत्री निर्मल छल्लाणी ने बताया कि दोनों ही आयोजन स्थल पर तेरपंथी सभा सरदारपुरा, महिला मंडल, युवक परिषद, अणुव्रत समिति और प्रोफेशनल फोरम सदस्यों ने गणवेश में उपस्थित होकर सामायिक की आराधना की।

कोटा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में सामायिक दिवस पर अभिनव सामायिक का गरिमामय कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने कहा कि अभिनव सामायिक का उपक्रम समता की साधना का बीजारोपण है। आत्मिक उत्थान का अनुपम अनुष्ठान है-सामायिक/सामायिक श्रावक के लिए साधु-जीवन के रसास्वादन का सारभूत विधान है। चित्तभूमि में समता के अवतरण की पृष्ठभूमि है- सामायिक।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आत्मा में समता का अवतरण होना ही सामायिक है। सामायिक आत्मा के आनंद का अनुष्ठान है। सामायिक आत्मा के भीतरी उल्लास की अनुभूति सशक्त सोपान साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन किया। साध्वी समत्वयशाजी ने उद्‌गार व्यक्त किए।

अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने मंगल संगान कर कार्यक्रम को मंगलमय बनाया। तेयुप अध्यक्ष आनंद दुगड़ ने आभार व्यक्त किया। साध्वी समत्वयशाजी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया।

इचलकरंजी

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा महापर्व के तीसरे 'अभिनव सामायिक' का आयोजन किया गया।

'साध्वी प्रमिला कुमारी जी आदि थाना ३' के सान्निध्य में किया गया।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने नमस्कार महामंत्र कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

साध्वी विज्ञप्रभाजी ने त्रिपदी वंदना करवाई। उसके पश्चात ध्यान करवाया गया।

साध्वी ने बताया कि जैन धर्म में सामायिक का विशेष महत्त्व माना जाता है। सामायिक को समता की साधना और निर्मल करने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया गया है। महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत की।

किशोर मंडल, कन्या मंडल, महिला मंडल, सभा, तेयुप सदस्यों की अच्छी उपस्थिति थी।

इस कार्यक्रम को सुचारु रूप से आयोजित करने में सभी संस्थाओं का भरपूर सहयोग रहा।

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशन एवं तत्त्वावधान में अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया गया। साध्वीश्रीजी ने नमस्कार महामंत्रोचार के साथ शुभारंभ किया। तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू ने स्वागत वक्तव्य दिया। त्रिपदी वंदना के पश्चात 'असिआउमा' का जाप तेयुप ने कराया। साध्वी दीप्तियशा जी ने ध्यान का प्रयोग कराया। स्वाध्याय के अंतर्गत साध्वी पीयूषप्रभा जी ने चौबीसी का संगान किया। तेयुप के सदस्यों के सहयोग से अभिनव सामायिक का कार्यक्रम सफल रहा।

फरीदाबाद

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक के कार्यक्रम का डॉ० साध्वी शुभप्रभा जी सान्निध्य में आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने सामायिक में क्या-क्या दोष लग सकते हैं, सामायिक कैसे की जाए, सामायिक किसके लिए की जाए आदि के द्वारा सामाजिक के महत्त्व को समझाया।

दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का कार्यक्रम हुआ। मधुर स्वरों में मंगल गीत का संगान किया। साध्वी शकुंतला कुमारी जी व साध्वी रक्षियतशा जी ने गीत गाया। साध्वी जागृतप्रभा जी ने त्रिपदी वंदना व जप का प्रयोग व साध्वी संचितयशा जी ने ध्यान के प्रयोग करवाए। शासनश्री साध्वी सोमलता जी ने कहा कि समता के उपवन में शांति के पुष्प खिलते हैं। साध्वीजी ने श्रमण भगवान महावीर के पर्व भव मरीचि का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया। मुंबई सभा के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने किया। प्रवास व्यवस्था समिति के मुख्य प्रबंधक मनोहर गोखरू, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, महेश बाफना, कोषाध्यक्ष गौतम कोठारी, मुंबई सभा से कार्याध्यक्ष नवरत्न गन्ना, मंत्री दीपक डागलिया, सहमंत्री गौतम डागा, संगठन मंत्री नरेन्द्र सिंघवी आदि उपस्थित थे।

सूरत

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप अभिनव सामायिक का आयोजन मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। तेयुप पदाधिकारीगण एवं भजन मंडली द्वारा मंगलाचरण का संज्ञान किया गया। मुनि अनंत कुमार जी द्वारा रोचक कहानियों एवं किस्सों द्वारा सामायिक का महत्त्व समझाया गया। मुनि उदित कुमार जी द्वारा अभिनव सामायिक का प्रयोग कराते हुए असिआउसा का जाप कराया। ध्यान का प्रयोग कराते हुए श्वास प्रेक्षा के साथ ध्यान का प्रयोग कराया। सामायिक का महत्त्व समझाया एवं निरंतर सामायिक करने से क्या लाभ होते हैं वह रोचक किस्से द्वारा समझाया एवं सभी श्रावकों को अधिक से अधिक सामायिक करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा सह ट्रस्टी अनिल बोथरा, सभाध्यक्ष नरपत कोचर, सभा मंत्री अनुराग कोठारी, कोषाध्यक्ष प्रदीप बैद, अध्यक्ष अमित सेठिया, तेमम अध्यक्षा श्रीमती राखी बैद, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत अध्यक्ष विजय कांत खटेड़, मंत्री सुनील श्रीश्रीमाल के साथ पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

जींद

साध्वी संयमप्रभा जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का कार्यक्रम तेयुप तत्त्वावधान में हुआ। अभिनव सामायिक का शुभारंभ त्रिपदी वंदना से साध्वी चिन्मययशा जी ने किया। साध्वी शशिकला जी ने नमस्कार महामंत्र के बारे में अर्थ सहित कई महत्त्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला। साध्वी डॉ० उज्ज्वलयशा जी ने ध्यान के प्रयोग करवाए। साध्वी संयमप्रभा जी ने सामायिक आवश्यक पर विस्तार से प्रकाश डाला। अध्यक्ष गौरव जैन ने सभी का स्वागत किया तथा आभार व्यक्त किया।

पचपदरा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का आयोजन शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। तेरापंथ सभा के संगठन मंत्री महेश, बी० खतंग ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी आरोग्यप्रभाश्री जी ने अभिनव सामायिक के प्रयोग करवाए। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी ने कहा कि सामायिक का अर्थ है समता की आराधना। साध्वी जगतयशा जी ने सामायिक के महत्त्व को बताते हुए कहा कि भ्रांति निवारण के लिए, शांति पाने का सोपान है सामायिक। सामायिक महान कर्म निर्जरा का साधन है। तेयुप अध्यक्ष दीपक चोपड़ा ने आभार ज्ञापित किया।

अहमदाबाद

तेयुप द्वारा सामायिक कार्यक्रम का आयोजक अभातेयुप निर्देशन में मुनि कुलदीप कुमार जी के और निर्देशन मुनि मुकुल कुमार जी के सान्निध्य तेरापंथ भवन शाहीबाग में कांकरिया-मणिनगर में शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

जयाचार्य निर्वाण दिवस का आयोजन

दिवेर।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद्‌जयाचार्य का निर्वाण महोत्सव त्याग और तपस्या के साथ मनाया गया।

मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि जयाचार्य हमारे धर्मसंघ के एक महान प्रभावकारी आचार्य थे। उन्होंने मर्यादाओं को महोत्सव का रूप दिया, जिसके चलते हम प्रतिवर्ष मर्यादा महोत्सव मनाते हैं, हमें आज के दिन जयाचार्य के त्याग, वैराग्य, अध्ययनशीलता को ग्रहण करना चाहिए।

मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि जयाचार्य ने तेरापंथ धर्मसंघ को व्यवस्था का नया रूप दिया, जिसके चलते हम शुभ व्यवस्थित ढंग से अपने कार्यक्रम को जनता तक आसानी से पहुँचा रहे हैं, हमें आज के दिन जयाचार्य के आचार्य काल के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। मुनि धैर्य कुमार जी ने कहा कि जयाचार्य मंत्र, तंत्र और यंत्र के बहुत बड़े ज्ञाता थे। उन्होंने अपने जीवन में जब भी कुछ कठिनाई आई तब मंत्र, तंत्र एवं यंत्र का सदुपयोग किया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि जयाचार्य ने अपने जीवन में विभिन्न ग्रंथों की रचना की जिसके माध्यम से हम तेरापंथ धर्मसंघ के गूढ़ रहस्य को समझ रहे हैं, जयाचार्य ने छोटी-सी उम्र में दीक्षा लेकर अपने कुशलता और प्रतिभाओं को जनता के सामने प्रस्तुत किया। उनका पूरा परिवार तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हुआ, आज हमें अपेक्षा है हम उनके जीवन से प्रेरणा लें।

इस अवसर पर मुनि संजय कुमार जी ने जैन धर्म के प्रभाव का जयाचार्य स्वयंभव के जीवन चरित्र को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में श्रद्धालुजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

साउथ हावड़ा

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा मल्लिक फाटक, जेल गेट के निकट शर्बत वितरण सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में पूर्व पार्षद एवं समाजसेवी शैलेश राय की गरिमामय उपस्थिति रही।

इसी क्रम में क्षेत्र के बने जीवन आश्रम में सेवा कार्य किया गया। खाद्य सामग्री का वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ परिषद ने सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया। आश्रम के ८५ मानसिक विकलांग रोगियों में सुबह का नाश्ता, मिठाई एवं फल का वितरण परिषद के युवाओं एवं पारिवारिकजनों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्रदान करने हेतु संदीप कुमार, जितेंद्र कुमार चोपड़ा का आभार। कार्यक्रम का संचालन संयोजक सुमित जैन ने किया।

राजसमंद

सघन पौधारोपण का कार्यक्रम तेयुप के परामर्शक महावीर धोका, यशवंत चपलोत के मुख्य आतिथ्य, सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार दक, अभातेयुप के राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य भूपेंद्र मादरेचा के विशिष्ट अतिथि एवं तेयुप अध्यक्ष भूपेश धोका की अध्यक्षता में दयालशाह जैन तीर्थ में आयोजित किया।

विनोद मेहता एवं परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमित बडोला के विशेष मार्गदर्शन में इस पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तेयुप व किशोर मंडल के सदस्यों की सहभागिता रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

✦ *संसार में परिवार, पैसा और हर प्रकार की सुविधा मिल सकती है, किंतु जिसे संयमरत प्राप्त हो गया, उसे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चीज मिल जाती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति की आध्यात्मिक मंगलकामना

शुभ योग से पुण्य बंध और निर्जरा साथ-साथ होती रहती है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १७ सितंबर, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि साधु दो प्रकार के होते हैं—एक प्रमत्त संयत और दूसरे अप्रमत्त संयत। प्रमत्त संयत केवल छठे गुणस्थान वाले साधु होते हैं। सातवें वाले तो अप्रमत्त साधु होते ही हैं, किंतु वह अप्रमत्त अवस्था आगे भी बनी रहती है।

प्रश्न है, जो प्रमत्त संयत साधु होता है, उसका कालमान कितना हो सकता है? मंडित पुत्र के नाम से उत्तर दिया गया है कि एक जीवन की अपेक्षा से कम-से-कम एक समय और उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व और कुछ कम क्रोड़। अनेक जीवों की दृष्टि से बताएँ तो संपूर्ण काल, हमेशा प्रमत्त संयत साधु मिलते हैं।

अगला प्रश्न है कि अप्रमत्त संयत साधु कितने काल तक रह सकता है? उत्तर दिया गया—एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त और उत्कृष्ट रूप में देशोन करोड़ पूर्व में कुछ कम क्रोड़ पूर्व और अनेक जीवों की अपेक्षा से अप्रमत्त संयत हमेशा वर्तमान साधु रहते हैं। ये दो प्रकार के साधुओं की भूमिकाएँ व कालावधि बताई गई है।

आठ वर्ष पार का बालक साधु बन सकता है। सातिरेक आठ वर्ष की अवस्था में केवल ज्ञान भी प्राप्त हो सकता है। यौगलिकों का आयुष्य तो लंबा होता है। इनके अलावा मनुष्य की उम्र उत्कृष्ट एक करोड़ वर्ष बताई गई है। सामायिक चारित्र की कालावधि देशोन करोड़ वर्ष पूर्व की

बताई गई है। न्यूनतम कालावधि है एक समय की। यह वृत्तिकार का मत है।

यह भी मान्यता है कि दीक्षा लेते ही पहले सातवाँ गुणस्थान आता है। उसके पश्चात् प्रमत्त संयम की प्राप्ति होती है। अप्रमत्त से प्रमत्त संयत में आने से पहले एक समय में मृत्यु हो जाए तो न्यूनतम समय प्रमत्त संयत रह सकता है। प्रमत्त संयत के बीच-बीच में भी अप्रमत्त संयत गुणस्थान आता-जाता रहता है।

जब जीव उपशम श्रेणी में आरोहण करता है, उसकी मृत्यु भी हो सकती है। वर्तमान में दोनों प्रकार के साधु मिल सकते हैं। साधु हैं, तो वह छठे गुणस्थान में तो होगा ही होगा। छठे से लेकर चौदहवें तक के नौ गुणस्थान साधु के होते हैं। साधु संयत है, तो वह वंदनीय-पूजनीय भी है।

प्रमाद दो प्रकार का होता है। छठे गुणस्थान वाला प्रमाद आश्रव है। हमारे साधुपने में अव्रत के त्याग है, पर प्रमाद के त्याग नहीं है। उसकी आलोयणा नहीं होती है। दूसरा प्रमाद है—अशुभ योग आश्रव है, उससे दोष में साधु प्रायश्चित का भागी बन जाता है। यह प्रमाद साधु के लिए त्याज्य है। यहाँ जो प्रमत्त संयत बताया गया है, वो तीसरे आश्रव वाला प्रमाद है। अप्रमत्त संयत साधु में दोनों ही प्रकार का प्रमाद नहीं होता।

तीसरे आश्रव वाला प्रमाद शुभ योग में रहते हुए भी रह सकता है। जब साधु स्वाध्याय में, शुभ योग में है, उस अवस्था में भी पाप कर्म का बंध चालू रहता है। 'प्रमाद आश्रव और कषाय आश्रव का पाप है' वो शुभ योग में विद्यमान साधु के भी पाप बंध का क्रम रह सकता है। शुभ योग से पुण्य बंध और निर्जरा भी साथ-साथ होती रहती है। यह एक उदाहरण से समझाया कि अनेक कार्य एक साथ हो सकते हैं।

कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि माजी महाराज छोगांजी बीदासर में स्थिरवास में भी स्वास्थ्य की अनुकूलता न रहने से पूज्य कालूगणी दर्शन देने पधारते हैं। वि०सं० १९८१ का मर्यादा महोत्सव सरदारशहर में करवाते हैं। सर्दी का समय है, पर सरदारशहर-वासियों को गुरुदेव तारने पधार गए हैं। दीक्षा महोत्सव भी आयोजित होता है। अगला चातुर्मास बीदासर करवाते हैं। वहाँ भी दीक्षाएँ प्रदान करवाते हैं। वहाँ से परमपूज्य लाडनूं पधार जाते हैं। गुरुदेव का मुख तो गुलाब के फूल जैसा है—उस पर बालक तुलसी जैसा भंवरा मंडरा रहा है।

एक जैनेत्तर साधु पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करवाई। मुनि ध्रुव कुमार जी ने शनिवार की सामूहिक सामायिक की सूचना दी।

उपासक प्रभु भाई मेहता ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेयुप, छापर ने 'मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव' की सूचना दी।

पूज्यप्रवर ने एमबीडीडी पर आशीर्वचन फरमाया। आज नरेंद्र मोदी व अभातेयुप का जन्मदिन है। दोनों का जीवन आध्यात्मिक रहे, चित्त समाधि में रहे, खूब धार्मिक उन्नति होती रहे। जनता में भी शांति रहे। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भगवती सूत्र और पन्नवणा सूत्र तत्त्वज्ञान का खजाना है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १५ सितंबर, २०२२

ऊर्जा के महान भंडार आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु में भद्रता, सरलता हो। मंडित पुत्र ने भगवान की पर्युपासना करते-करते भगवान से प्रश्न पूछा—भंते! क्रियाएँ कितनी प्रज्ञप्त हैं? उत्तर दिया गया—पाँच क्रियाएँ प्राप्त हैं। कायिकी, आधिकरणीकी, प्राद्वोषिकी, पारितापिनी और प्राणिपातिनी क्रिया।

हिंसा दुनिया में चलती है, कहीं युद्ध भी होता है। हिंसा एक प्रवृत्ति है। प्रवृत्ति कराने में वृत्ति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। हिंसा का भी एक परिवार है। ये पाँच क्रियाएँ हिंसा के परिकर हैं। हिंसा से अविरति है, भाव नहीं है यह इसका मूल है। इंद्रिय और विषय के रूप में काया की क्रिया कायिकी प्रवृत्ति है। आधिकरण या निशस्त्र होगा तो उसके माध्यम से हिंसा होगी।

शस्त्रों का निर्माण करना भी अधिकरणी की प्रवृत्ति है। हिंसा करने के लिए द्वेष-आक्रोश भी चाहिए। क्रोध की क्रिया प्राद्वोषिकी की क्रिया हो जाती है। ये तीन प्रवृत्तियाँ तो पृष्ठभूमि हो गई। चौथी क्रिया है—पारितापिनी की और पाँचवीं है प्राणातिपातिनी क्रिया। पीड़ा पहुँचाना पारितापिनी क्रिया है। जान से मार देना प्राणातिपात क्रिया है। यह हिंसा की अंतिम क्रिया है।

इन क्रियाओं के संदर्भ में प्रश्न पूछा गया कि भंते! पहले क्रिया होती है और बाद में वेदना होती है या पहले वेदना होती है, बाद में क्रिया? उत्तर दिया गया कि पहले क्रिया होती है, बाद में वेदना होती है। क्रिया और वेदना में कारण-कार्य का संबंध है। क्रिया से कर्मबंध होता है। वेदना से अनुभव होता है। क्रिया बीज है, वेदना उसका फल है।

अहेतुकवादी कहते हैं कि हेतु के बिना भी दुःख हो जाता है। परिस्थितिवादी कहते हैं कि दुःख परिस्थितिजन्य होता है। ऐसी अनेक मान्यताएँ हैं। हमारी मान्यता है कि पहले क्रिया होगी, कर्म बंध होगा, पाप करेंगे बाद में उसका फल मिलेगा। क्रिया कारण है, दुःख उसका फल है, कार्य है।

क्रिया का अर्थ है आश्रव और वेदना का अर्थ है कर्म का बंध। इस तरह अनेक तात्त्विक बातें भगवती सूत्र में हैं। तत्त्वज्ञान की दृष्टि से हम आगमों में देखें, पन्नवणा सूत्र तत्त्वज्ञान का खजाना है। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने आगमों का अनुवाद, भाष्य, संपादन आदि किया है, हम उन आगमों का अध्ययन करें। क्रिया को पढ़कर हम हिंसा-अशुभ योग से बचने का प्रयास करें। क्रिया लगाने में हम अक्रिय बनें।

साध्वी धर्मयशा जी की स्मृति सभा

परमपूज्य ने साध्वी धर्मयशा जी का परिचय दिया। वे बीदासर के गोलछा परिवार से थी। गुरुदेव तुलसी के मुख कमल से २२ वर्ष की उम्र में दीक्षित हुई थी। उन्होंने प्रायः आगम बत्तीसी का अध्ययन किया था। वे कला से भी निपुण थी। स्वास्थ्य की अनुकूलता न रहने के कारण उन्हें सेवा केंद्र में रहना पड़ा था। स्वास्थ्य लाभ के लिए जयपुर भेजा गया था। पर वहाँ पर कालधर्म को प्राप्त हो गई। उनके प्रति मध्यस्थ व मंगलभावना रूप में पूज्यप्रवर ने चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वी जिनप्रभा जी, साध्वी अमितप्रभा जी, साध्वी जगवत्सला जी, साध्वी नयश्री जी, साध्वी शुभ्रयशा जी ने साध्वी धर्मयशा जी के प्रति अपनी मंगलभावना, आध्यात्मिक मंगलकामना के रूप में अपने उद्गार अभिव्यक्त करवाए।

बीदासर सभा अध्यक्ष विमल लिंगा, चंदा गिड़िया ने भी अपनी मंगलभावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

गौतम सेठिया, तिरुवन्नामलै की स्मृति में उनके परिवार द्वारा स्मृति पुस्तक पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में भेंट किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। गौतम के पुत्र गणेश ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मेगा ब्लड डानेशन ड्राईव 2022 की झलकियां

भारत सरकार के रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव रक्तदान करते हुए।

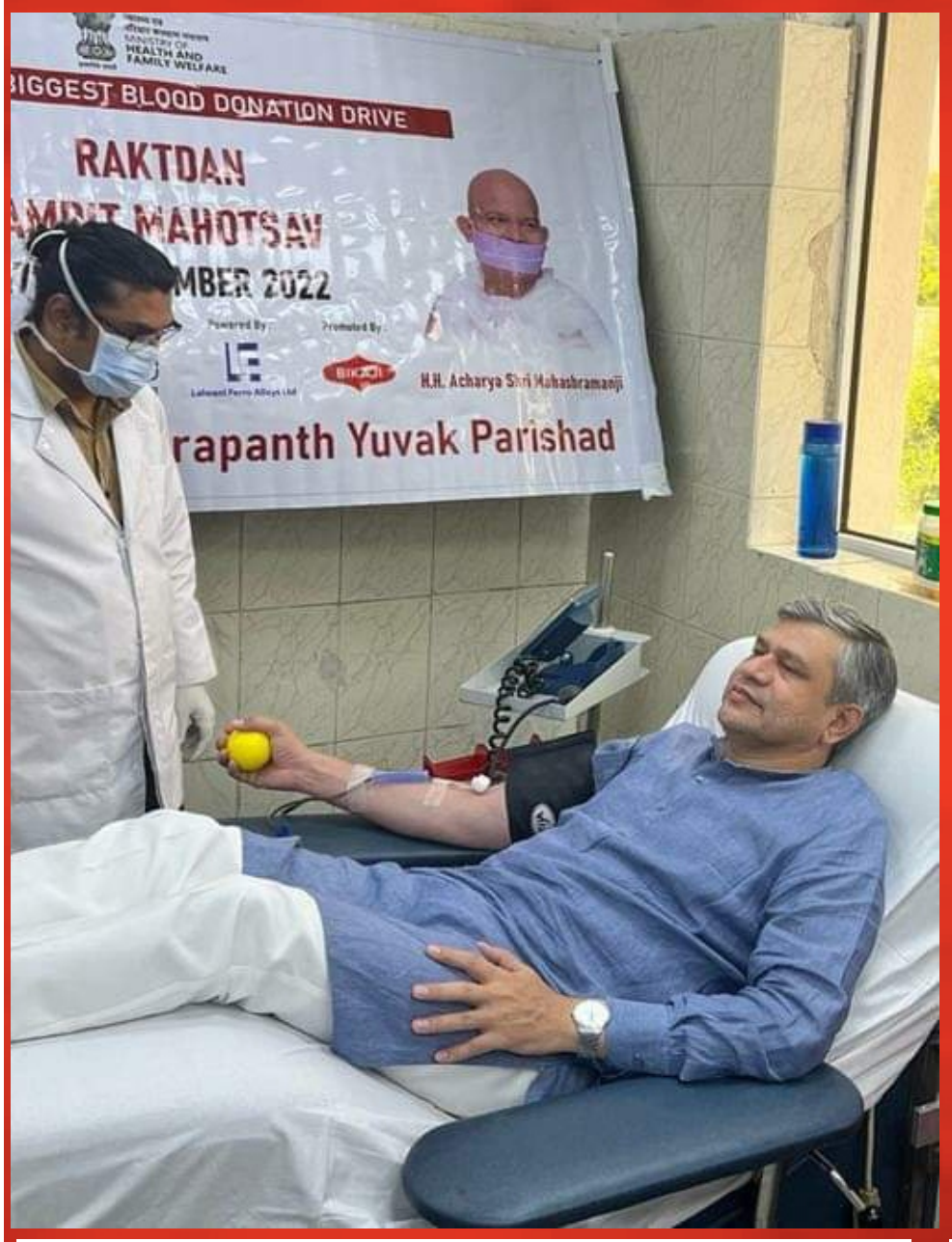

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्री श्री मनसुख मांडविया रक्तदान करते हुए।

भारत सरकार/GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय/MINISTRY OF RAILWAYS
(रेलवे बोर्ड/RAILWAY BOARD)

No.2022/Sec(Spl)/200/19 New Delhi, dated: 12.09.2022

Principal Chief Security Commissioners/RPF
All Zonal Railways, RPSF, PUs, KRCL,
CORE, Const. RDSO & KMR.

Directors/JR RPF Academy/LKO & IG/ TC/MLY & KGP.

Sub:-Mega Blood Donation Drive on September 17, 2022
Ref:- 1) Secy/MoH&FW DO No. IM-12016/02/2022-NBTC/BTD dt: 30.08.2022.
2) ABTYP email message dated 08.08.2022

In reference to above, MoH&FW has proposed to organize a **mega blood donation drive on 17th September 2022**. The Activity aims to collect close to one lakh units of blood from Voluntary blood donors on a single day by involving all Ministries and Departments of Government of India, State/Union Governments, citizens of country, especially the youth, various Non-Government and community based organizations and other stakeholders. The campaign slogan for the event will be "Donating blood is an act of solidarity. Join the effort and save lives." ["रक्तदान सामाजिक एकजुटता का प्रतीक है। प्रयास में सम्मिलित होकर जीवन बचाएं।"]

2. The **mega blood donation drive** to be organized on **17th September 2022** to all medical colleges, hospitals healthcare organizations, blood banks and other stake holders for their active participation The blood banks in State may be assisted to organize blood donation drive and encouraged to collaborate with active and reputed NGOs promoting blood donation like Indian Red Cross Society, Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad, Blood Donor Organizations etc State Government Authorities including respective State AIDS Control Society (SACS), State Blood Transfusion Council (SBTC) may consider granting necessary permissions and facilitate organization of blood donation drive.

3. The facility for registration of voluntary blood donors is available on the Aarogya Setu App and e-Raktkosh portal of the Union Ministry of Health A large scale media campaign for registering the pledges of persons on Aarogya Setu Apple-Raktkosh portal, for facilitating their blood donation in the identified blood banks/blood donation drive on **17th September 2022** has been initiated.

…./2-

-2-

4. Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad (ABTYP) is holding **Mega Blood Donation Drive** (MBDD) throughout the World, prospectively on **17th September2022** to raise a sufficient amount of blood donations with special support from the NHM (National Health Mission) & NACO (National Aids Control Org.). A brief abstract about ABTYP and organizational endeavor is enclosed.

5. Therefore, it is requested to widely disseminate the information and encourage members of the force to take part voluntary in **megablood donation drive on 17.09.2022**

This issues with the approval of DG/RPF.

Encl: As above

(Jyoti Kumar Satija)
DIG/Project/NR

राजेश भूषण, आई/एएस
सचिव
RAJESH BHUSHAN, IAS
SECRETARY

भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
Government of India
Department of Health and Family Welfare
Ministry of Health and Family Welfare

D.O.No.IM-12016/02/2022-NBTC/BTS
30th August, 2022

Dear Colleague,

An efficient and effective national blood system mandates universal and timely access to safe blood. To ensure this, voluntary, non-remunerated, regular blood donation with wide and active participation of the people is required.

2. It is proposed to organize **a mega blood donation camp on 17th September 2022.** The Activity aims **to collect close to one lakh units of blood from Voluntary blood donors on a single day**. It is planned to involve all Ministries and Departments of Government of India, State/Union Governments, citizens of country, especially the youth, various Non-Government and community based organizations and other stakeholders. The campaign slogan for the event will be **"Donating blood is an act of solidarity. Join the effort and save lives."** [**"रक्तदान सामाजिक एकजुटता का प्रतीक है। प्रयास में सम्मिलित होकर जीवन बचाएं।"**] States and Union Territories are requested to also organise their campaign in local/regional languages.

3. The States are requested to widely disseminate the information about the mega blood donation camp to be organized on 17th September 2022 to all medical colleges, hospitals, healthcare organizations, blood banks and other stake holders for their active participation. The blood banks in your State may be assisted to organize blood donation camps on 17-9-2022 and encouraged to collaborate with active and reputed NGOs promoting blood donation like Indian Red Cross Society, Akhil Bhartiya Terapanth Yuvak Parishad, Blood Donor Organizations etc. State Government Authorities including respective State AIDS Control Society (SACS), State Blood Transfusion Council (SBTC) may consider granting necessary permissions and facilitate organization of blood donation camps.

4. The facility for registration of voluntary blood donors is available on the Aarogya Setu App and e-Raktkosh portal of the Union Ministry of Health. A large scale media campaign for registering the pledges of persons on Aarogya Setu App/e-Raktkosh portal, for facilitating their blood donation in the identified blood banks/blood donation camps on 17th September, 2022 has been initiated by this Ministry.

5. The Data of persons registered for blood donation on 17th September, 2022 on Aarogya Setu App, will be made accessible to blood banks/organizations conducting the blood donation camps through the e-RaktKosh web portal.

6. After the mega blood donation camp on 17th September, 2022, the blood donation drive will be continued across all States / UTs till 01st October, 2022 i.e. National Voluntary Blood Donation Day (NVBDD).

…..contd/-

Room No. 156, A-Wing, Nirman Bhawan, New Delhi-110 011
Tele : (O) 011-23061863, 23063221, Fax : 011-23061252, E-mail : secyhfw@nic.in

: 2 :

7. A live dashboard will be operationalized on the e-RaktKosh web portal for tracking the State/UT wise number of blood units donated / collected from 17th September, 2022 upto 01st October, 2022. The facility for registration of National level NGOs is also being made functional on e-RaktKosh webportal so that they can upload and track the data regarding the blood donation Camps to be organized/ committed by them.

8. I seek your full cooperation and support in this national endeavour for eliminating the need for replacement blood donors and to promote committed year-round voluntary blood donation, so as to maintain adequate supplies and achieve universal and timely access to safe blood transfusion.

Warm Regards.

Yours sincerely

(Rajesh Bhushan)

Additional Chief Secretary / Principal Secretary / Secretary (Health &FW)
All States/UTs

Globally Supported by:
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें
OLD UNION THANGA HOUSE ANTISPOT
Powered By:
Lalwani Ferro Alloys Ltd
Promoted By:
BIKAJI

✦ अतीत अनंत है, अनागत भी अनंत है, किंतु वर्तमान बहुत ही छोटा समय होता है। छोटा होने पर भी वर्तमान किसी दृष्टि से ज्यादा उपयोगी होता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राईव (MBDD) 2022 की मीडिया माध्यमों से गूंज

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में रक्तदाता संस्था रचने जा रही है रक्तदान का नया कीर्तिमान

सांकेतिक रक्तदान का प्रारंभ कर मानव सेवा की एक अनूठी पहल की

तेरापंथ युवक परिषद ने किया मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव शिविर का आगाज
आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में बनेगा रक्तदान का नया कीर्तिमान

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में
विश्व की सर्वाधिक रक्तदाता संस्था रचने जा रही है रक्तदान का नया कीर्तिमान

श्री संदीप कुमार ललवानी
नोखा - कोलकाता
Lalwani Ferro Alloys Ltd

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**